XIAS

हिंदी माध्यम

घटनाचक्र सारांश

प्राचीन इतिहास

UPSC • UPPCS • BPSC • UKPCS • MPPCS • RAS • CGPSC • JPSC

एवं अन्य राज्य लोक सेवा आयोग परीक्षाओं हेतु उपयोगी।

विगत वर्षों के प्रश्नों (PYQs) का सार-संकलन।

संक्षिप्त, तथ्यात्मक एवं पुनरावृत्ति (Revision) के लिए उपयुक्त सामग्री।

BOOKLET NO. 1/10

8287115435

www.xias.in

Download the app

click here

नमस्ते!

आपका दिन शुभ हो!

X IAS घटनाचक्र सार

घटनाचक्र श्रृंखला लंबे समय से अपने सूक्ष्म अध्ययन, विद्वत्तापूर्ण दृष्टिकोण तथा विषयों के व्यापक कवरेज के लिए जानी जाती है। प्रस्तुत पुस्तिका उसी विश्वसनीय परंपरा को आगे बढ़ाते हुए संबंधित विषय की मूल अवधारणाओं, महत्वपूर्ण तथ्यों तथा परीक्षा-उन्मुख सामग्री को सरल, व्यवस्थित एवं संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करती है।

इस पुस्तिका का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं, बल्कि विषय की स्पष्ट एवं विश्लेषणात्मक समझ विकसित करना है, ताकि अभ्यर्थी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे जाने वाले तथ्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रश्नों का आत्मविश्वास के साथ उत्तर दे सकें। प्रत्येक अध्याय को नवीनतम परीक्षा प्रवृत्तियों, मानक स्रोतों तथा विश्वसनीय संदर्भों के आधार पर सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है।

पुस्तिका की मुख्य विशेषताएँ

- **परीक्षा-उन्मुख प्रस्तुतीकरण:** नवीनतम परीक्षा प्रवृत्तियों एवं पाठ्यक्रम के अनुरूप सामग्री।
- **अवधारणात्मक स्पष्टता:** सरल भाषा, तार्किक क्रम एवं स्पष्ट व्याख्या।
- **विश्वसनीय स्रोत:** मानक पुस्तकों, आधिकारिक रिपोर्टों एवं प्रामाणिक दस्तावेजों पर आधारित सामग्री।
- **त्वरित पुनरावृत्ति:** संक्षिप्त, सुव्यवस्थित एवं अंतिम समय की प्रभावी तैयारी हेतु उपयुक्त प्रस्तुति।

X IAS द्वारा मूल्य संवर्धन (Value Addition)

प्रतियोगी परीक्षाओं की बदलती प्रकृति को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तिका में **तथ्य, डेटा, कीवर्ड्स, परीक्षा-उपयोगी विश्लेषण एवं मूल्य-संवर्धित सामग्री** को समाहित किया गया है, जिससे अभ्यर्थियों को अवधारणात्मक समझ, उत्तर लेखन तथा समग्र तैयारी में गुणवत्तापूर्ण बढ़त मिल सके। हमें विश्वास है कि यह पुस्तिका आपकी तैयारी को अधिक प्रभावी, व्यवस्थित एवं परिणामोन्मुख बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

आपकी सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ! — टीम X IAS

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

UPSC, BPSC, UPPCS, HCS एवं अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं हेतु निःशुल्क उच्च-गुणवत्ता अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए हमारे Telegram Channel से जुड़ें।

Telegram: https://t.me/X_IAS | **Website:** www.xias.in | **YouTube:** www.youtube.com/@X_IAS | **Support:** https://t.me/BTSXIAS

© **X IAS. सर्वाधिकार सुरक्षित।** इस पुस्तिका की समस्त सामग्री कॉपीराइट द्वारा संरक्षित है। X IAS की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इसका पूर्ण अथवा **आंशिक पुनर्प्रकाशन, प्रतिलिपि निर्माण, डिजिटल वितरण अथवा व्यावसायिक उपयोग प्रतिबंधित है**। यह सामग्री केवल व्यक्तिगत अध्ययन एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु प्रदान की गई है।

प्रकाशन, पुनर्प्रकाशन अथवा अन्य प्रकाशन अधिकार (Publication Rights) संबंधी अनुमति हेतु संपर्क करें:
मो.: 8287115435 | ईमेल: xiaseducation@gmail.com

UPSC, BPSC, UPPCS, HCS एवं अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए उच्च गुणवत्ता की नि:शुल्क अध्ययन सामग्री प्राप्त करें।

X IAS के Telegram Channels से जुड़ें।

🔗 **Link:** https://t.me/addlist/fdKL4cb2W7I2YTk1 **या QR Code स्कैन करें।**

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

FOCUS UPPCS
सफलता सुनिश्चित
BY XIAS
XIAS
X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

FOCUS BPSC
सफलता सुनिश्चित
BY XIAS
XIAS
X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 1: भारत में पाषाण युग और प्रारंभिक मानव संस्कृतियाँ

1. **प्रागैतिहासिक और आद्यऐतिहासिक काल**
   - आद्यऐतिहासिक काल: वह युग जिसका **कोई दस्तावेजी ऐतिहासिक प्रमाण नहीं** है।
   - प्रागैतिहासिक काल: वह काल जिसमें एक ऐसी लिपि के प्रमाण मिलते हैं जिसे अभी तक समझा नहीं जा सका है, जो प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक कालों के बीच की कड़ी का काम करता है।
   - ऐतिहासिक काल: इसकी शुरुआत **वैदिक संस्कृति** से शुरू होने वाले दस्तावेजी विवरणों से होती

2. **पाषाण युग का वर्गीकरण**
   - पुरापाषाण काल: इस काल में **पत्थर** के औजारों का उपयोग किया जाता था।
     - निम्न पुरापाषाण काल: कुल्हाड़ी, छुरी और कुल्हाड़ी जैसे औजार।
     - मध्य पुरापाषाण काल: नुकीले औजार, छेद करने वाला यंत्र और खुरचनी जैसे उपकरण।
     - उच्च पुरापाषाण काल: बुरिन जैसे औजार।
   - मध्यपाषाण काल: सूक्ष्म पत्थरों और पशुओं के प्रारंभिक पालतूकरण के साक्ष्यों वाला संक्रमणकालीन चरण।
   - नवपाषाण काल: **कृषि और स्थायी जीवन** के आगमन का काल।

3. **प्रमुख पुरातात्विक खोजें**
   - पुरापाषाणकालीन खोजें:

- **सोहन नदी घाटी (पाकिस्तान):** प्रारंभिक चॉपर-काटने के औजार।
- **वदामदुरई और अत्तिरमपक्कम (मद्रास के पास):** हथकड़ी के उपकरण।
- **बेलन घाटी:** निम्न पुरापाषाण काल से संबंधित व्यापक पुरातात्विक स्थल। उल्लेखनीय खोजों में हड्डी से बनी मातृ देवी की मूर्ति शामिल है।
- **भीमबेटका (भोपाल के पास):** भारत में मानव जीवन के सबसे प्राचीन अवशेषों में से कुछ के साथ मिलने वाली चट्टानी गुफाएँ।

- मध्यपाषाण काल की खोजें:
  - विंध्य क्षेत्र: **सी.एल. कार्लाइल** द्वारा खोजी गई शिलाचित्र (1867-68)।
  - **आदमगढ़ और बागोर: पशुओं को पालतू बनाने के सबसे प्रारंभिक प्रमाण।**
  - महादहा (यूपी): हड्डी और सींग के औजार।
  - दमदमा (उत्तर प्रदेश): दोहरे और तिहरे दफन वाली मानव कब्रें।
- नवपाषाणकालीन खोजें:
  - कोल्डीहवा और मेहरगढ़: **चावल और गेहूं** की खेती के प्रारंभिक प्रमाण।
  - लाहुरादेवा (उत्तर प्रदेश): भारत में **कृषि के सबसे पुराने साक्ष्य**, जो 9000-7000 ईसा पूर्व के हैं।
  - मेहरगढ़: पाषाण युग से लेकर हड़प्पा सभ्यता तक के निरंतर सांस्कृतिक अवशेष।

4. **महापाषाण संरचनाएं**

- **मेगालिथ: दफन और स्मारक** के लिए उपयोग की जाने वाली बड़ी पत्थर की संरचनाएं। इनमें कक्षीय मकबरे, डोलमेन, पत्थर की कतारें, पत्थर के घेरे (क्रोमलेच) और गड्ढे वाले घेरे शामिल हैं।
- **बुरज़ाहोम (कश्मीर घाटी):** प्रागैतिहासिक बस्ती, जहां दफन गड्ढों में **मानव और पशु कंकाल** पाए गए हैं।

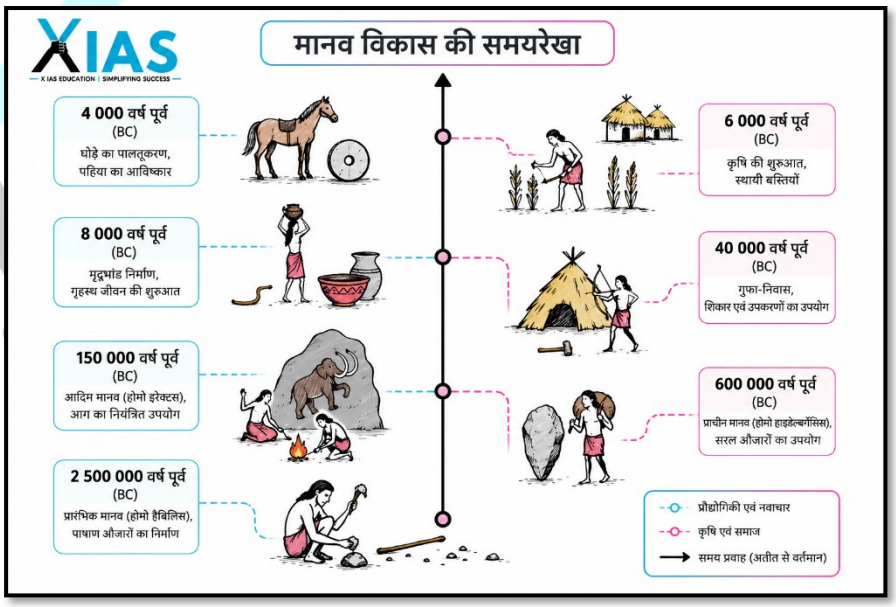

5. **ताम्रपाषाण काल (ताम्र का युग)**

- **तांबे का उपयोग:** पत्थर के औजारों के साथ इस्तेमाल होने वाली पहली धातु।
- बस्तियाँ: दक्षिणपूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र और दक्षिणपूर्वी भारत में पाई जाती हैं।
- नवदातोली (इंदौर के पास): गोल और आयताकार आवासीय संरचनाओं के साक्ष्य।
- गेरू रंग के मिट्टी के बर्तन (OCP): **अतरंजीखेड़ा और हस्तिनापुर** में पाए जाने वाले विशिष्ट प्रकार के मिट्टी के बर्तन।

6. **पुरातत्व संस्थान**

- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई):** इसकी स्थापना **1871 में अलेक्जेंडर कनिंघम** को प्रथम महानिदेशक के रूप में नियुक्त करके की गई थी। लॉर्ड कर्जन के कार्यकाल के दौरान **1902 में जॉन मार्शल** के अधीन इसका केंद्रीकरण किया गया।
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (भोपाल): संस्कृति विभाग के अधीन एक स्वायत्त संगठन। महत्वपूर्ण तथ्य और संबंधित जानकारी के लिए ज़रूरी ।
- **रॉबर्ट ब्रूस फूट:** ब्रिटिश भूविज्ञानी और पुरातत्वविद् जिन्होंने भारत में प्रारंभिक पाषाण युग के शोध में योगदान दिया।

- **डी. टेरा का अभियान (1935):** सोहन घाटी में महत्वपूर्ण शोध।
- **जी.आर. शर्मा का शोध: बेलन घाटी** में निर्देशित उत्खनन, जिसमें अनेक पुरातात्विक स्थल खोजे गए।
- **कृषि का विकास:**
    - जौ (8000 ईसा पूर्व): पश्चिमी एशिया में उगाया जाने वाला पहला अनाज।
    - गेहूं (8000 ईसा पूर्व): उसी क्षेत्र में इसकी खेती की जाती थी।
    - चावल (7000 ईसा पूर्व): चीन में यांग्त्ज़ी नदी के किनारे इसकी खेती की जाती थी।
    - मक्का (6000 ईसा पूर्व): मेक्सिको में पहला प्रमाण मिला।
    - बाजरा (5500 ईसा पूर्व): चीन में इसकी खेती की जाती थी।
    - ज्वार (5000 ईसा पूर्व): पूर्वी अफ्रीका में इसकी खेती की जाती थी।
    - सरसों (5000 ईसा पूर्व): दक्षिणपूर्व एशिया में इसकी खेती की जाती थी।
    - जई (2300 ईसा पूर्व): यूरोप में इसकी खेती की जाती थी।

अतिरिक्त पुरातात्विक स्थल और खोजें

- सराय नहर राय (उत्तर प्रदेश): **चार मानव** कंकालों वाली कब्र।
- लेखाहिया (विंध्य क्षेत्र): 17 मानव कंकाल खोजे गए, जिनमें जॉन आर. लुकास (ओरेगन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका) का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
- **भीमबेटका: यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल**, जिसमें प्रारंभिक मानव जीवन को दर्शाने वाले शिलाचित्र हैं।
- **जोरवे संस्कृति**: आयताकार घर जिनमें **मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास** के प्रमाण मिलते हैं, जैसा कि दफन प्रथाओं में देखा जा सकता है।
- **संगना कल्लू (कर्नाटक):** राख के टीलों वाला नवपाषाणकालीन स्थल जो चरवाहों के मौसमी शिविरों का संकेत देता है।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 2: सिंधु घाटी सभ्यता

हड़प्पा सभ्यता (सिंधु घाटी सभ्यता)

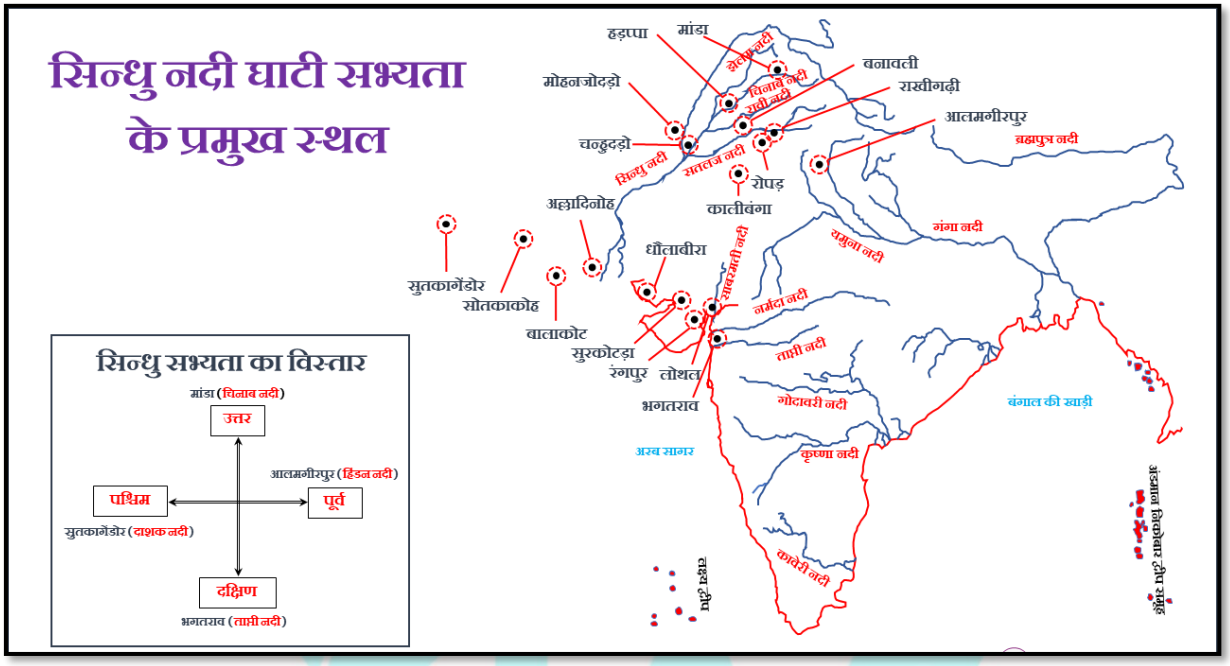

हड़प्पा सभ्यता, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, विश्व की सबसे प्राचीन शहरी सभ्यताओं में से एक थी। यह सभ्यता **लगभग 2500 ईसा** पूर्व वर्तमान **पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिमी भारत** में फली-फूली। यह सभ्यता अपनी उन्नत शहरी योजना, वास्तुकला और सामाजिक संगठन के लिए प्रसिद्ध है।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

लेखन और प्रतीक

- पशु प्रतीक: मुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों पर **हाथी, गैंडे, बाघ, हिरण और भेड़** के चित्र आम थे, लेकिन गायों का चित्रण उल्लेखनीय रूप से अनुपस्थित था।
- **अनसुलझी लिपि:** हड़प्पा संस्कृति की लेखन प्रणाली अभी तक अनसुलझी है, लेकिन यह सभ्यता के बारे में जानकारी का एक प्रमुख स्रोत है।

प्रमुख स्थल और खोजें

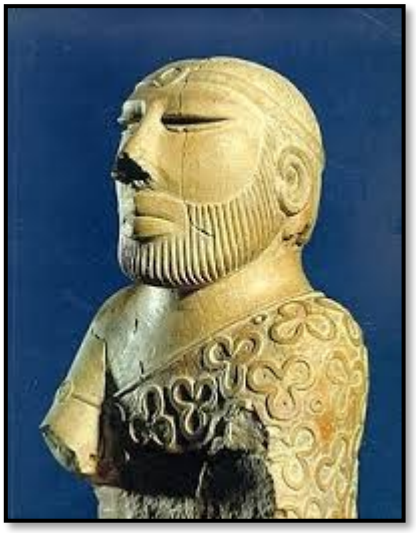

- **मोहनजोदड़ो: राखल दास बनर्जी द्वारा 1922** में खोजा गया, इसे सिंधी में "**मृतकों का टीला**" के नाम से जाना जाता है। मुख्य आकर्षणों में शामिल हैं:
  - ग्रेट बाथ: अनुष्ठानिक स्नान के लिए प्रयुक्त।
  - सार्वजनिक भवन: बड़ी संरचनाएं जिनका उपयोग संभवतः उच्च अधिकारियों या पुजारियों द्वारा किया जाता था।
  - पुरातत्वीय वस्तुएं: इनमें **मातृ देवी की मूर्ति, नृत्य करती कन्या की प्रतिमा, पुजारी-राजा की प्रतिमा, पशुपति की मुहर और सूती कपड़े के साक्ष्य शामिल हैं।**
- **चन्हुदारो:** 1931 में **एन.जी. मजूमदार** द्वारा खोजा गया, यह एक औद्योगिक केंद्र था जहाँ **शंख बनाने, चूड़ी बनाने** और मनके बनाने के प्रमाण मिले थे।
- **लोथल:** 1954 में **एस.आर. राव** द्वारा खोजा गया, इसमें एक गोदी और चावल के छिलके, धातु श्रमिकों और अग्नि वेदियों के साक्ष्य मिले।
- **कालीबंगन:** राजस्थान में स्थित, जिसकी खोज **1961 में बीबी लाल** ने की थी, यह अपने जोते हुए खेत की सतह और

मेसोपोटामियाई मुहरों के लिए उल्लेखनीय है।

- **धोलावीरा: आर.एस. बिष्ट** द्वारा 1990-91 में उत्खनित, यह भारत में दूसरा सबसे बड़ा हड़प्पा स्थल है, जो अपनी उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली के लिए जाना जाता है।
- **सुरकोताड़ा:** गुजरात में स्थित, यह स्थान **घोड़े की हड्डियों और मिट्टी के बर्तनों** से बने दफन स्थलों के साक्ष्यों के लिए जाना जाता है।
- **दैमाबाद:** हड़प्पा संस्कृति से प्रभावित **कांसे की वस्तुओं** के लिए प्रसिद्ध।
- **राखीगढ़ी:** भारत में सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल, जो **हरियाणा** में स्थित है।
- **रोपड़:** इसकी खोज 1950 में **बीबी लाल** ने की थी और यह यशदत्त शर्मा द्वारा किए गए उत्खनन के लिए जाना जाता है।
- **रंगपुर:** गुजरात में स्थित, यह स्थान चावल, बाजरा और बाजरा की खेती के संकेत देने वाले वनस्पति अवशेषों के लिए जाना जाता है।
- **दाधेरी:** चित्रित धूसर मिट्टी के बर्तनों की संस्कृति के लिए प्रसिद्ध, आर्यों से संबंधित।

प्रमुख स्थल और उनसे संबंधित नदियाँ

- हड़प्पा: रावी नदी के किनारे स्थित।
- मोहनजोदड़ो: सिंधु नदी पर स्थित।
- चन्हूदड़ो: सिंधु नदी के पास स्थित है।
- लोथल: भोगवा नदी पर स्थित है।
- कालीबंगन: घग्गर-हकरा नदी के पास स्थित है।
- धोलावीरा: कच्छ के रण में स्थित है।
- सुरकोटदा: गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है।
- दैमाबाद: प्रवारा नदी पर स्थित।
- राखीगढ़ी: यह घग्गर-हाकरा नदी के मैदानी इलाके में स्थित है।
- रोपड़: सतलुज नदी पर स्थित।
- रंगपुर: गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित है।
- दधेरी: पंजाब के लुधियाना में स्थित।

प्राचीन सभ्यताएँ: एज़्टेक, माया, मुइस्का

इंका एज़्टेक सभ्यता

- उत्पत्ति: उत्तरी मेक्सिको में रहने वाली खानाबदोश जनजाति।
- महत्व: अपने शक्तिशाली साम्राज्य और जटिल सामाजिक संरचना, धार्मिक प्रथाओं और प्रभावशाली स्थापत्य उपलब्धियों के लिए जानी जाती है।

माया सभ्यता

- स्थान: वर्तमान ग्वाटेमाला के उष्णकटिबंधीय निचले इलाकों के आसपास केंद्रित।
- महत्व: अपनी उन्नत लेखन प्रणाली, खगोलीय ज्ञान और पिरामिडों और मंदिरों सहित विशाल वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध।

मुइस्का सभ्यता

- स्थान: प्राचीन कोलंबिया में फला-फूला।

- महत्व: ये लोग अपने परिष्कृत स्वर्ण शिल्प, नमक उत्पादन और एल डोराडो की किंवदंती के लिए जाने जाते हैं।

इंका सभ्यता

- स्थान: पेरू के पहाड़ी इलाकों में उत्पन्न हुई।
- महत्व: अपने विशाल साम्राज्य, उन्नत कृषि तकनीकों, सड़क प्रणालियों और माचू पिचू के प्रतिष्ठित स्थल के लिए प्रसिद्ध।

सुमेरियन सभ्यता और लेखन प्रणाली

सुमेरियन सभ्यता

- लेखन का विकास: सुमेरियन लोग **सबसे पहले व्यवस्थित तरीके से लेखन कला विकसित** करने वाले थे। उनकी मूल लिपि सरल और आदिम थी।
- **क्यूनीफॉर्म लिपि**: इसे सबसे प्राचीन लेखन प्रणालियों में से एक माना जाता है, जिसकी विशेषता मिट्टी की गोलियों पर बने कील के आकार के चिह्न हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता के लुप्त होने के सिद्धांत: बाढ़

- शोधकर्ता: मार्शल, मैके, एस.आर. राव
- परिकल्पना: विनाशकारी बाढ़ के कारण सभ्यता का पतन हुआ होगा।

आर्यों का हमला

- शोधकर्ता: गॉर्डन चाइल्ड, मोर्टिमर व्हीलर, स्टुअर्ट पिगॉट
- परिकल्पना: आर्य जनजातियों के आक्रमणों ने पतन में योगदान दिया।

जलवायु परिवर्तन

- शोधकर्ता: ऑरेल स्टीन, अमलानंद घोष
- परिकल्पना: जलवायु परिवर्तन ने कृषि और जीवन स्थितियों को प्रभावित किया होगा, जिससे सभ्यता का पतन हुआ होगा।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

भूवैज्ञानिक परिवर्तन

- शोधकर्ता: एमआर साहनी, एचटी लैम्ब्रिक, जीएस डेल
- परिकल्पना: भूकंप या नदियों के मार्ग में परिवर्तन जैसी भूवैज्ञानिक घटनाओं ने समाज को बाधित किया हो सकता है।

महामारी

- शोधकर्ता: केयूआर कैनेडी
- परिकल्पना: व्यापक बीमारियों के कारण जनसंख्या में भारी कमी आई होगी, जिससे सभ्यता के अंत में योगदान हुआ होगा।

अध्याय 3: वैदिक युग

वैदिक साहित्य

- इसे **श्रुति** भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'जो सुना जाता है'।
- चार वेद: **ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।**
- ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को सामूहिक रूप से वेदत्रयी या त्रयी के नाम से जाना जाता है।
- ऋग्वेद में **10 मंडल, 1028 सूक्त और 10,552 ऋचाएँ** हैं। मंडल **2 से 7 को सबसे प्राचीन** माना जाता है।

अतिरिक्त बिंदु

- गंगा-यमुना दोआब को आर्यों द्वारा **'ब्रह्मर्षि देश'** के नाम से जाना जाता था।
- **मध्य देश:** हिमालय और विंध्याचल पर्वत श्रृंखलाओं के बीच का क्षेत्र।
- **आर्यावर्त:** उत्तर भारत के संपूर्ण क्षेत्र को इसमें समाहित किया गया है, जिसका नाम आर्यों के विस्तार के बाद रखा गया है।

ऋग्वेद

ऋग्वेद को दस खंडों में विभाजित किया गया है, जिन्हें मंडल कहा जाता है। मंडल और उनके संबंधित लेखक निम्नलिखित हैं:

मंडल और उनके लेखक

प्रथम मंडल - होत्र, मदुच्छंद, हिरण्याक्ष, अगस्त्य, कवस, कुत्स और विभिन्न अन्य ऋषियों द्वारा लिखित।

द्वितीय मंडल - ग्रित्समदा द्वारा रचित।

तीसरा मंडल - विश्वामित्र और उनके परिवार द्वारा रचित।

चौथा मंडल - वामदेव द्वारा रचित।

पंचम मंडल - अत्रि और उनके वंशजों द्वारा रचित।

छठा मंडल - भारद्वाज के पुत्रों द्वारा रचित।

सातवां मंडल - वशिष्ठ और उनके परिवार द्वारा रचित।

आठवां मंडल - कण्व और अंगिरस द्वारा रचित।

नौवां मंडल - पूरी तरह से सोम को समर्पित और विभिन्न ऋषियों द्वारा रचित।

दसवां मंडल - वामदेव, अत्रि, भारद्वाज और अन्य सहित विभिन्न ऋषियों द्वारा रचित।

गायत्री मंत्र: विश्वामित्र द्वारा रचित और सूर्य देव को समर्पित तीसरे मंडल में वर्णित।

नौवां मंडल: सभी 114 मंत्र 'सोम' को समर्पित हैं।

वर्ण व्यवस्था: प्रारंभ में तीन वर्णों (ब्रह्म, क्षत्र और विष) का वर्णन किया गया है। शूद्र शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में मिलता है।

पुरोहित: ऋग्वेद के पुरोहितों को 'होता' कहा जाता था।

ब्राह्मण: ऐत्रेय और कौशितकी ऋग्वेद के दो ब्राह्मण हैं।

शाखाएँ: पतंजलि के अनुसार, ऋग्वेद की 21 शाखाएँ हैं।

यजुर्वेद

XIAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- **अर्थ:** 'यज्ञ संबंधी सूत्रों का ज्ञान।' ऋग्वेद के एक या दो शताब्दी बाद संकलित, इसमें यज्ञ करने वाले पुरोहितों के लिए गद्य और पद्य सूत्र शामिल हैं।
- **विभाग:** यजुर्वेद को **शुक्ल (श्वेत) यजुर्वेद और कृष्ण (काला) यजुर्वेद** में विभाजित किया गया है।
    - शुक्ल यजुर्वेद: केवल **काव्य** रूप में उपलब्ध है; **वाजसनेयी** संहिता है।
    - कृष्ण यजुर्वेद: इसमें **काव्य और गद्य** दोनों रूप शामिल हैं।
- **शतपथ ब्राह्मण:** यजुर्वेद से संबंधित वैदिक अनुष्ठानों, इतिहास और पौराणिक कथाओं का वर्णन करने वाला एक गद्य ग्रंथ।
    - **पुरुषमेध:** शतपथ ब्राह्मण में वर्णित है।
    - राजा विदेह माधव की कहानी: शतपथ ब्राह्मण में वर्णित है, जिसमें अग्नि (अग्नि वैश्वानर) और ऋषि गौतम राहुगण शामिल हैं।

सामवेद

- विवरण: चारों वेदों में **सबसे छोटा,** ऋग्वेद से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ, और मुख्य रूप से अनुष्ठानिक मंत्रोच्चार के लिए संकलित किया गया।
- श्लोक: सामवेद संहिता में **1875 श्लोक** हैं, जिनमें से अधिकांश ऋग्वेद से लिए गए हैं।

अथर्ववेद

- पुरोहित: अथर्ववेद में मंत्रोच्चार करने वाले पुरोहितों को ब्रह्मा कहा गया है।
- प्रथम संदर्भ: 'अंग' और 'मगध' का उल्लेख गांधारी और मुजावत के साथ किया गया है।
- उत्तर-वैदिक काल: विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियों के कारण कुरु और पांचाल क्षेत्र आर्य संस्कृति का केंद्र बन गए।
- **आयुर्वेद:** 'जीवन का विज्ञान', सर्वप्रथम **अथर्ववेद में प्रकट हुआ** और इसे इसका उपवेद और उपांग माना जाता है।
- गोपथ ब्राह्मण: अथर्ववेद से संबंधित एकमात्र ब्राह्मण ग्रंथ, जिसमें वैदिक अनुष्ठानों का वर्णन है।

उपनिषद

- **दर्शनशास्त्र:** ये धार्मिक ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि शाश्वत दर्शन का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये किसी भी विचारधारा या धर्म का विरोध नहीं करते, बल्कि अवधारणाओं को विशिष्ट ढंग से समझाते हैं।
- **मोक्ष:** उपनिषदों में सर्वप्रथम वर्णित, जिसका अर्थ है जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्ति।
- **मूल अवधारणा:** आत्मा ही अस्तित्व (या व्यक्ति) का सार है, न कि शरीर या मन।
- **कठोपनिषद**: मृत्यु के देवता यम और मृत्यु तथा उसके परे के अर्थ की खोज कर रहे एक युवक नचिकेता के बीच हुई बातचीत की कहानी।
- **मुंडकोपनिषद:** "**सत्यमेव जयते**" (सत्य की ही जीत होती है) वाक्यांश का स्रोत, **26 जनवरी 1950** को भारत के राष्ट्रीय आदर्श वाक्य के रूप में अपनाया गया।
- **छांदोग्य उपनिषद:** वैदिक ऋषि **सत्यकाम जाबाल** की विशेषताएँ।
- **बृहदारण्यक उपनिषद में "तमसो मा ज्योतिर्गमय"** वाक्यांश का उल्लेख है, जिसका अर्थ है "हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।"

पुराण

पवित्र साहित्य: इसमें 18 पुराण शामिल हैं, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

मत्स्य पुराण, मार्कंडेय पुराण, भागवत पुराण, भविष्य पुराण, ब्रह्मांड पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, ब्रह्म पुराण, वामन पुराण, वराह पुराण, विष्णु पुराण, वायु पुराण, अग्नि पुराण, नारद पुराण, पद्म पुराण, लिंग पुराण, गरुड़ पुराण, स्कन्द पुराण और कूर्म पुराण।

- **श्रीमद् भागवतम्:** इसे समस्त वैदिक साहित्य का 'शिखर रत्न' माना जाता है।
- **भागवद् गीता:** महाभारत का एक भाग,इसमें संस्कृत में लिखे गए 700 श्लोक हैं।

XIAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- **महाभारत**: मूल रूप से इसमें 8,800 श्लोक थे और इसे 'जय' या जयसंहिता कहा जाता था। आज इसमें 100,000 श्लोक हैं और माना जाता है कि इसकी रचना ऋषि वेद व्यास ने की थी।
- पुराणों की पाँच विशेषताएँ:
    1. **सर्ग:** प्राकृतिक रचना
    2. **प्रतिसर्ग:** नवीनीकरण (ब्रह्मांड की उत्पत्ति)
    3. **वंश:** ऋषियों और देवताओं का इतिहास
    4. **मन्वंतर:** विभिन्न मनुओं के काल
    5. **वंशानुचरिता:** राजाओं की वंशावली
- **पंच-जन:** यह पाँच विशिष्ट जनजातियों को संदर्भित करता है जिनके पूर्वज यदु, तुर्वस, द्रुह्य, अनु और पुरु थे।
- **दाशराज्ञ युद्ध (दस राजाओं का युद्ध):** ऋग्वेद की एक प्राचीन कथा जिसमें सुदास द्वारा दस राजाओं के संघ पर विजय प्राप्त करने का वर्णन है।

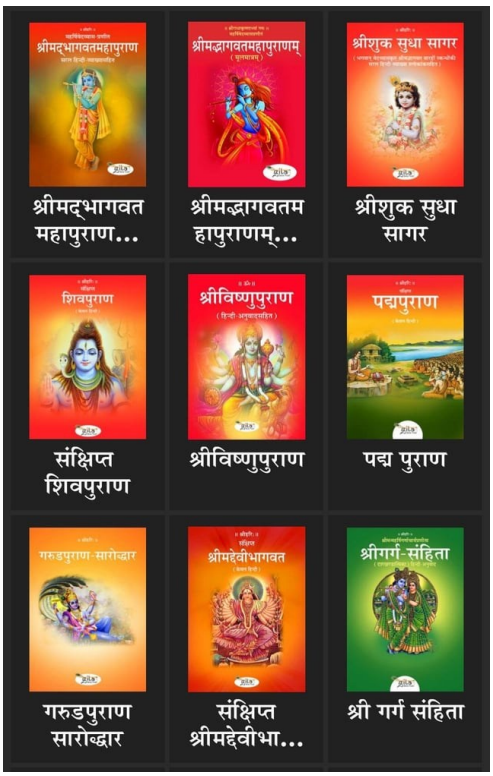

ऋग्वैदिक समाज

- **विदुषी महिलाएँ:** कई भजनों की रचना महिलाओं द्वारा की गई, जिन्हें ब्रह्मवादिनी कहा जाता है, जैसे **लोपामुद्रा, विश्ववारा, सिकता, निवावरी और घोषा**।
- **पारिवारिक संरचना:**
    - **कुल:** ऋग्वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई।
    - **गृह:** परिवार के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द।
    - **पितृसत्तात्मक समाज:** वरुण सूक्त में वर्णित अनुसार, पिता अपने बच्चे को बेच सकता था।
- **आर्थिक गतिविधियाँ:**
    - **यावा:** जौ के लिए प्रयुक्त शब्द।
    - **निश्का:** सोने का हार।
- **व्यवसाय:**
    - **निवी:** कमर के नीचे पहने जाने वाले कपड़े।
    - **वासस:** कमर के ऊपर पहने जाने वाले वस्त्र।
    - **तक्षा:** बढ़ई।
    - **कर्मा:** धातुकर्मी।
    - **बेकनाट:** साहूकार।
    - **अरित्री:** नाविक।
- **धर्म:**
    - प्रकृति की पूजा और यज्ञ करना।
    - बहुदेववाद में देवताओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है:
        1. **आकाश के देवता:** वरुण, मित्र, सूर्य, विष्णु।
        2. **अंतरिक्ष के देवता:** इंद्र, रुद्र।
        3. **पृथ्वी के देवता:** अग्नि, बृहस्पति, सोम।
    - **इंद्र:** सबसे शक्तिशाली देवता, जिन्हें पुरंदरा (किले तोड़ने वाले) कहा जाता है, जिनके लिए 250 भजन समर्पित हैं।
    - **बोगज़-कोई शिलालेख:** इसमें इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्यों का उल्लेख है।
- **जीवन के चरण (आश्रम):** ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- **पारिवारिक व्यवस्था:**
    - वंश, गोत्र, कुल: पारिवारिक व्यवस्था से संबंधित।
    - कोसा: राजकोष से संबंधित।
    - गोत्र: इसका अर्थ है **"गाय का आश्रय" या "गायों का झुंड"**।
- **गाय:** "**अघन्या" (हत्या के योग्य नहीं)** माना जाता है।
    - ऋग्वेद के कुछ सूक्तों में विनिमय का माध्यम और देवता।
- **धर्म और ऋता:**
    - धर्म: ब्रह्मांडीय विधान, प्राकृतिक या दैवीय नियम।
    - ऋत: सार्वभौमिक सामंजस्य, जिसमें सभी चीजों का अपना उचित स्थान और कार्य हो।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 4: बौद्ध धर्म

गौतम बुद्ध की उत्पत्ति और जीवन

- **जन्म और प्रारंभिक जीवन:**
  - गौतम बुद्ध का जन्म **563 ईसा** पूर्व में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी में हुआ था।
  - उनके पिता, **शुद्धोदन, शाक्य वंश के मुखिया थे।**
  - उनकी माता **मायादेवी** (जिन्हें महामाया के नाम से भी जाना जाता था) **कोलियन वंश** से थीं।
  - गौतम बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ था।
  - उनके जन्म के कुछ दिनों बाद ही उनकी मां का निधन हो गया और उनका पालन-पोषण उनकी चाची प्रजापति गौतमी ने किया।

- **विवाह और त्याग:**
  - 16 वर्ष की आयु में उनका विवाह शाक्य वंश की पुत्री यशोदरा से हुआ था।
  - बाद के बौद्ध ग्रंथों में यशोधरा के अन्य नामों में **गोपा, बिम्बा और भडकच्छन शामिल हैं।**
  - उनके बेटे का नाम **राहुल** रखा गया।
  - बुद्ध के जीवन पर चार दृश्यों का गहरा प्रभाव पड़ा: **एक वृद्ध व्यक्ति, एक बीमार व्यक्ति और एक मृत व्यक्ति और एक संत।**
  - सिद्धार्थ ने अपनी पत्नी और बच्चे को त्यागने का निर्णय लिया और **29 वर्ष** की आयु में घर छोड़ दिया, बौद्ध ग्रंथों में इस महत्वपूर्ण घटना को **'महाभिनिष्क्रमण'** कहा जाता है।
- **ज्ञानोदय का मार्ग:**
  - वैशाली के पास सिद्धार्थ की मुलाकात सांख्य दर्शन के **आचार्य अलार कलाम** से हुई।
  - इसके बाद उनकी मुलाकात राजगृह में **धर्माचार्य रुद्रक रामपुत्त** से हुई।
  - बोधगया में एक बोधि वृक्ष के नीचे छह वर्षों तक निरंतर ध्यान करने के बाद, उन्होंने 35 वर्ष की आयु में ज्ञान प्राप्त किया।
  - ज्ञान प्राप्ति के बाद, उन्हें **'बुद्ध'** कहा जाने लगा, जिन्हें **'तथागत'** (वह व्यक्ति जिसका सत्य ही ज्ञान है) और **'शाक्यमुनि'** (शाक्य वंश के ऋषि) के नाम से भी जाना जाता है।

बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएँ

- **पहला उपदेश:**
  - बुद्ध का पहला उपदेश **ऋषिपत्तन** (वर्तमान सारनाथ, वाराणसी) में पाँच ब्राह्मण सन्यासियों को दिया गया था।
  - इस प्रवचन को **'धर्मचक्रप्रवर्तन'** (धर्म के पहिये को घुमाना) कहा जाता है।
  - प्रवचन में चार आर्य सत्यों और आर्य अष्टांगिक मार्ग का परिचय दिया गया।

X IAS EDUCATION | S

- **बौद्ध धर्म के प्रतीक:**
    - **जन्म:** कमल और बैल
    - **महाभिनिष्क्रमण:** घोड़ा
    - **आत्मज्ञान (निर्वाण):** पीपल (बोधि वृक्ष)
    - **पहला उपदेश (धर्मचक्रप्रवर्तन):** चक्र
    - **मृत्यु (परिनिर्वाण):** स्तूप

बौद्ध धर्म का प्रसार

- **संरक्षण और शिष्य:**
    - मगध के शासक बिम्बिसार ने बुद्ध के निवास के लिए **'वेलावन'** महाविहार का निर्माण कराया था।
    - वैशाली में, लिच्छिवियों ने उनके निवास के लिए **'कुटग्रासला'** का निर्माण किया था।
    - वैशाली की राजसी दरबारी **अमरापली** उनकी शिष्या बन गई और उसने बौद्ध भिक्षुओं के लिए अपनी **आम्रपालिवन** प्रदान की।
- **प्रमुख व्यक्तियों की भूमिका:**
    - कोशल के एक धनी व्यापारी **अनाथपिंडक** शिष्य बन गए और उन्होंने **'जेतवन'** विहार दान किया।
    - कोशल **राजा प्रसेनजित और उनके परिवार** ने बौद्ध धर्म अपनाया और **'पुब्बारामा' विहार** का निर्माण किया।
    - बुद्ध ने वैशाली में महिलाओं को बौद्ध संघ में शामिल होने की अनुमति दी, और उनकी चाची **महाप्रजापति** पहली भिक्षुणी बनीं।
    - **देवदत्त**, जो बुद्ध के चचेरे भाई थे और शुरू में उनके अनुयायी थे, बाद में उनके शत्रु बन गए।
- **अंतिम दिन:**
    - बुद्ध ने अपना अंतिम **वर्षा ऋतु वैशाली** में बिताया और 483 ईसा पूर्व में **80 वर्ष** की आयु में कुशीनगर में उनका निधन हो गया।
    - बौद्ध ग्रंथों में इस घटना को **'महापरिनिर्वाण'** कहा जाता है।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

मुख्य शिक्षाएँ

- **चार आर्य सत्य:**
    - **दुख:** संसार में दुख है।
    - **दुख समुदाय:** दुख का कारण है (जिसकी मूल वजह तृष्णा या इच्छा है)।
    - **दुख निरोध:** दुख का निवारण संभव है।
    - **दुख निरोध गामिनी प्रतिपदा:** दुख निवारण का मार्ग है (अष्टांगिक मार्ग)।
- **आर्य अष्टांगिक मार्ग:**
    - **सम्यक दृष्टि**
    - **सम्यक संकल्प**
    - **सम्यक वाक्**
    - **सम्यक कर्मान्त**
    - **सम्यक आजीव**
    - **सम्यक व्यायाम (प्रयास)**
    - **सम्यक स्मृति**
    - **सम्यक समाधि**

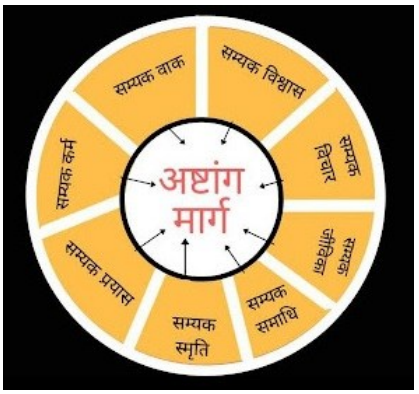

बौद्ध धर्म का आकर्षण:

- इसकी सादगी और अहिंसा ने इसे आम लोगों के लिए सुलभ बना दिया।
- शिक्षाओं के प्रसार के लिए स्थानीय भाषाओं का उपयोग।

- जातिगत भेदभाव का खंडन, गैर-ब्राह्मणों और दलितों को आकर्षित करना।

बौद्ध परिषदें

- **प्रथम बौद्ध संगीति:**
  - **वर्ष**: 483 ईसा पूर्व
  - **स्थान:** राजगृह
  - **अध्यक्ष:** महाकश्यप
  - **शासक:** अजातशत्रु
- **द्वितीय बौद्ध संगीति:**
  - **वर्ष:** 383 ईसा पूर्व
  - **स्थान:** वैशाली
  - **अध्यक्ष:** सर्वकामी (या साबाकामी)
  - **शासक:** कलासोका
- **तृतीय बौद्ध संगीति:**
  - **वर्ष:** 247 ईसा पूर्व
  - **स्थान:** पाटलिपुत्र
  - **अध्यक्ष:** मोग्गलिपुत्त तिस्सा
  - **शासक:** अशोक
- **चतुर्थ बौद्ध संगीति:**
  - **वर्ष:** पहली शताब्दी ईस्वी
  - **स्थान**: कुंडलवाना (कश्मीर)
  - **अध्यक्ष:** वासुमित्र
  - **उपाध्यक्ष:** अश्वघोष
  - **शासक:** कनिष्क

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

संप्रदाय और सिद्धांत

- **हीनयान और महायान:**
  - चौथी बौद्ध परिषद के दौरान, बौद्ध धर्म दो मुख्य संप्रदायों में विभाजित हो गया था:
    - **हीनयान (लघु वाहन):**
      - उनका मानना है कि **बुद्ध एक महान व्यक्ति थे,** देवता नहीं।
      - यह व्यक्तिगत प्रयासों के माध्यम से व्यक्तिगत उद्धार पर केंद्रित है।
      - **मूर्ति पूजा नहीं करता।**
      - इसमें कठोर मठवासी अनुशासन पर जोर दिया जाता है।
      - प्रमुख संप्रदाय: **वैभाषिक और सौत्रांतिक।**
    - **महायान (महान वाहन):**
      - **बुद्ध को देवता** के रूप में मानता है और मूर्ति पूजा करता है।
      - यह सभी प्राणियों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करता है और करुणा और सेवा पर जोर देता है।
      - सरलीकृत सिद्धांत जो आम लोगों को आसानी से समझ में आ सकें।
      - मुख्य पात्र: **बोधिसत्व,** जो सभी प्राणियों के लिए ज्ञान की खोज करते हैं।
- **सर्वास्तिवाद:**

- **सिद्धांत**: "वह सिद्धांत जिसके अनुसार सभी का अस्तित्व है।"

- यह मानता है कि अतीत, वर्तमान और भविष्य की सभी घटनाओं का किसी न किसी रूप में अस्तित्व होता है।
- धर्म के कारकों के शाश्वत अस्तित्व पर जोर देता है।
- मूल सिद्धांत: **अनित्य (अस्थिरता), जो यह दावा करता है कि सभी बद्ध अस्तित्व क्षणभंगुर है और दुख का स्रोत है।**

- **मुख्य आंकड़े:**
  - **नागार्जुन:**
    - **शून्यता** की अवधारणा में योगदान दिया।
    - उन्होंने **"मध्यमिका कारिका"** नामक पुस्तक लिखी, जिसमें सापेक्षता के सिद्धांत और सह-उत्पत्ति पर चर्चा की गई है।
    - इन्हें "**भारतीय आइंस्टीन**" के नाम से जाना जाता है।
  - **ह्वेनसांग:**
    - नागार्जुन को विश्व की चार महान मार्गदर्शक शक्तियों में से एक कहा जाता है।
  - **मैत्रेय:**
    - बौद्ध परंपरा में इन्हें "**भविष्य का बुद्ध**" कहा जाता है।
  - **अवलोकितेश्वर:**
    - असीम करुणा के बोधिसत्व के रूप में जाने जाते हैं, जिन्हें अक्सर **"पद्मपाणि" या "कमल धारण करने वाले"** के रूप में चित्रित किया जाता है।

बौद्ध साहित्य

- **त्रिपिटक (तीन टोकरियाँ):**
  - **सूत्र पिटक:**
    - इसमें बुद्ध के वचन और शिक्षाएं शामिल हैं।
  - **विनय पिटक:**
    - मठवासी जीवन के लिए विस्तृत नियम।
  - **अभिधम्म पिटक:**
    - धम्म की दार्शनिक व्याख्या, जिसमें सात पुस्तकें शामिल हैं: यमक, पथन, कथावत्थु, पुग्गलपन्नत्ती, धातुकथा, विभंग और धम्मसंगनी।
- **जातक कथाएँ:**
  - पाली भाषा में लिखी गई बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियां।

महत्वपूर्ण मुद्राएँ और प्रतीक

- **भूमिस्पर्श मुद्रा:**
  - बुद्ध दाहिने हाथ को जमीन पर स्पर्श करते हुए बैठे हैं, जो ज्ञानोदय के क्षण और राक्षस मारा की पराजय का प्रतीक है।

बौद्ध शिक्षा केंद्र

- **नालंदा:**
  - महायान बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र।
  - **गुप्त काल** के दौरान अस्तित्व में आया।
  - कुमारगुप्त प्रथम, बुद्धगुप्त, तथागतगुप्त, नव नालंदा और बालादित्य जैसे शासकों द्वारा समर्थित।

XIAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- आधुनिक केंद्र: बिहार सरकार द्वारा **1951 में स्थापित "नवनालैंड महाविहार"**।

- **विक्रमशिला:**
  - **पाल राजा धर्मपाल** द्वारा स्थापित।
  - उत्तर-मध्यकाल में **महायान और विशेषकर वज्रयान** बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र।
- **अन्य केंद्र:**
  - तक्षशिला और वल्लभी।
  - इसने चीन, जापान, तिब्बत और दक्षिण पूर्व एशिया के छात्रों को आकर्षित किया।

स्तूप और चैत्य

- **स्तूप:**
  - आरंभ में इसे **चैत्य या स्तूप** कहा जाता था, जिसका निर्माण शवों को दफनाने के बाद जमीन पर किया जाता था।
  - चार प्रकार: **शारिक (शारीरिक) स्तूप, पारिभौगिक स्तूप, उद्धेशिका (उद्देश्य) स्तूप, और पुद्गलिक (पूजा) स्तूप।**
  - महत्वपूर्ण स्तूप: **बोधगया** (ज्ञानोदय स्थल), **सांची** (बुद्ध के जीवन से संबंधित नहीं है लेकिन भक्ति के लिए महत्वपूर्ण)।
  - **ऋग्वेद संदर्भ:** जंगल के ऊपर राजा वरुण का स्तूप।
- **चैत्य:**
  - चिता (अंत्येष्टि चिता) से संबंधित, मठों के पास निर्मित पूजा स्थल।

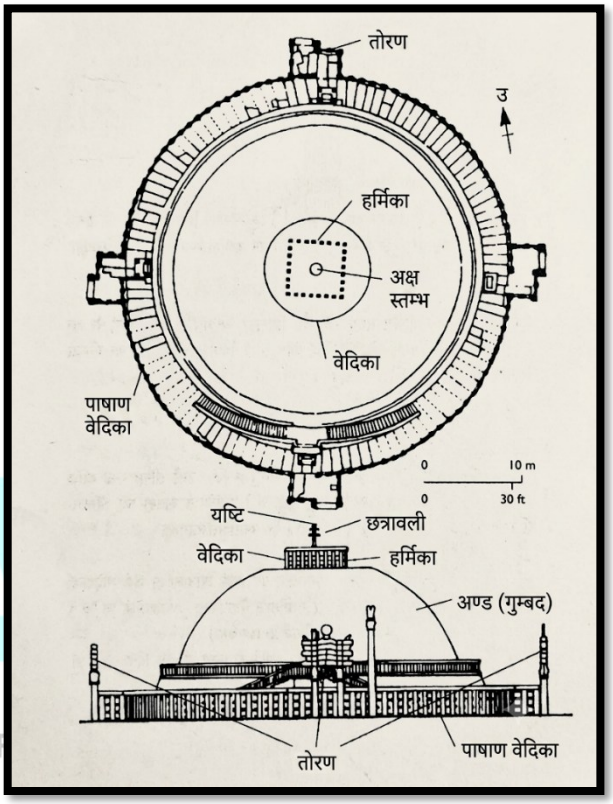

उल्लेखनीय बौद्ध ग्रंथ और लेखक

- मिलिंदपन्हो: नागसेना द्वारा
- बुद्धचरित, सौन्दरानन्द, सारिपुत्र प्रकरण: अश्वघोष द्वारा
- मध्यमिका कारिका: नागार्जुन द्वारा
- विशुद्धिमग्ग: बुद्धघोष द्वारा
- अभिधम्म कोष: वसुबंधु द्वारा
  मुख्य नियम और अवधारणाएँ
- अनित्य: अनित्यता का सिद्धांत।
- दुःख: पीड़ा।
- शून्यता: शून्यता।
- बोधिसत्व: समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए ज्ञान की खोज करने वाला।
- महापरिनिर्वाण: बुद्ध की मृत्यु और अंतिम मुक्ति।

X IAS EDUCATION | SIMPLI

अध्याय 5: जैन धर्म

जैन धर्म का संक्षिप्त विवरण

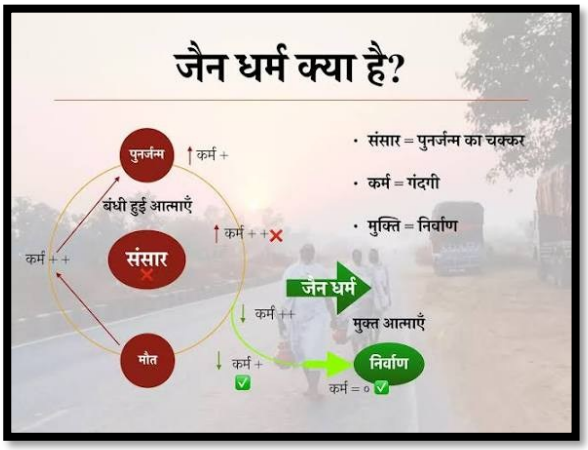

- **नाम की उत्पत्ति:** जैन शब्द संस्कृत शब्द **'जिन'** से लिया गया है जिसका अर्थ है **विजेता**।
- संस्थापक और उनके पद:
  - जैन धर्म के संस्थापकों को **'तीर्थंकर'** कहा जाता है।
  - जैन महात्माओं को **'निर्ग्रंथ'** कहा जाता है।
  - जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हैं जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार किया।

24 तीर्थंकरों की सूची:

1. ऋषभदेव
2. अजीतनाथ
3. संभवनाथ
4. अभिनंदन
5. सुमतिनाथ
6. पद्मप्रभा
7. सुपार्श्वनाथ
8. चंद्रप्रभा
9. पुष्पदंत (सुविधिनाथ)
10. शीतलनाथ
11. श्रेयांसनाथ
12. वासुपूज्य
13. विमलनाथ
14. अनंतनाथ
15. धर्मनाथ
16. शांतिनाथ
17. कूनथुनाथ
18. अरनाथ
19. मल्लिनाथ
20. मुनिसुव्रत

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

21. नमिनाथ
22. नेमिनाथ (अरिष्तानेमी)
23. पार्श्वनाथ
24. महावीर स्वामी

प्रमुख तीर्थंकरों

- **ऋषभदेव:**
  - प्रथम तीर्थंकर
  - अन्य नाम : **ऋषभनाथ, आदिनाथ, वृषभनाथ।**
  - **ऋग्वेद** में इनका उल्लेख है।
- **पार्श्वनाथ:**
  - 23वें तीर्थंकर
  - **काशी (वाराणसी)** में जन्म।
  - पिता : अश्वसेन, काशी के राजा।
  - **सम्मेद शिखर पर्वत** पर ही कठोर तपस्या के बाद कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ था और वहीं उनका परिनिर्वाण भी हुआ था।
  - उन्होंने चार संयमों की वकालत की: **अहिंसा (अहिंसा), अपरिग्रह (अपरिग्रह), अस्तेय (चोरी न करना) और सत्य (सच्चाई)।**
- **महावीर स्वामी:**
  - **24वें और अंतिम तीर्थंकर।**
  - लगभग 540 ईसा पूर्व वैशाली के पास कुंडाग्राम में जन्म हुआ।
  - पिता: सिद्धार्थज्ञात्रिक क्षत्रिय संघ के प्रमुख.
  - माता: **त्रिशाला, जो लिच्छवी गणराज्य के प्रमुख चेतक की बहन थीं।**
  - बचपन का नाम: **वर्धमान**।
  - पत्नी: यशोदा (कुंडिन्य गोत्र की बेटी); पुत्री: अनोज्जा (प्रियदर्शना)।
  - ज्रिम्भिक गांव के पास रिजुपालिका नदी के किनारे एक साल के पेड़ के नीचे कैवल्य (पूर्ण ज्ञान) प्राप्त किया।
  - **कैवल्य के बाद केवलिन, अर्हत, जिन और निर्ग्रंथ के नाम से जाना जाता है।**
  - लिच्छवी प्रमुख चेतक के महत्वपूर्ण समर्थन से जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया गया।
  - **मक्खली गोसाला**, जो उनके प्रारंभिक शिष्य थे, ने बाद में 'नियतिवाद' पर आधारित अपना स्वयं का पंथ **'आजीवक संप्रदाय'** स्थापित किया।

जैन दर्शन और प्रथाएं

- **मोक्ष के साधन:**
  - **सम्यक दर्शन**
  - **सम्यक चरित्र (आचरण)**
  - **सम्यक ज्ञान**

इन्हें सामूहिक रूप से 'रत्नात्रय' कहा जाता है।

- **अवधारणाएँ**
  - **संवर तत्व:** नए कर्म पुद्गलों (An influx of karma) का आत्मा की ओर बहाव रुक जाना।
  - **निर्जरा:** कर्म का विनाश।
  - **अनंत चतुष्टय:** अनंत ज्ञान, अनंत बोध, अनंत वीर्य और अनंत आनंद।
- **प्रतिज्ञाएँ:**

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- महाव्रत: अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह।
- अनुव्रत: आम लोगों के लिए सरलीकृत व्रत।

प्रमुख जैन तीर्थंकरों और उनके प्रतीक

1. **ऋषभदेव** - बैल
2. **अजितनाथ** - हाथी
3. **संभवनाथ** - घोड़ा
4. **पद्मप्रभा** - कमल
5. **सुपार्श्वनाथ** - साथिया (स्वस्तिक)
6. **मल्लिनाथ** - कलश (कलश)
7. **नमिनाथ** - नीलकमल (नीला कमल)
8. **नेमिनाथ** - शंख
9. **पार्श्वनाथ** - सर्प
10. **महावीर स्वामी** - सिंह

जैन संघ और साहित्य

- **संघ:**
  - महावीर स्वामी द्वारा स्थापित।
  - **'गणधर'** कहलाने वाले 11 प्रमुख अनुयायी: **इंद्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, आर्य व्यक्त,सुधर्मन, मंदित, मौर्यपुत्र, अकंपित, अचलभ्रता, मेतर्य, प्रभास।**
  - महावीर की मृत्यु के बाद सुधर्मन जैन संघ के पहले अध्यक्ष बने, उनके बाद जंबू अध्यक्ष बने। संभूतविजय और भद्रबाहु।
  - भयंकर अकाल के कारण **भद्रबाहु** और उनके अनुयायियों को दक्षिण की ओर पलायन करना पड़ा, जिससे **दिगंबर और श्वेतंबर** संप्रदायों का गठन हुआ।

XIAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- **जैन साहित्य (आगम):**
  - **12 अंग:** आचारांग-सूत्र, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवयंग, भगवती व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञात्रधर्मकथा, उपासकदश:, अंतकृददश:, अनुत्तररूपपतिकादश:, प्रश्नव्याकरण, विपाकश्रुता, दृष्टिवाद।
  - **12 उपांग:** ब्रह्मांड का वर्णन, प्राणियों का वर्गीकरण, खगोल विज्ञान, समय विभाजन, मरणोपरांत जीवन।
  - **10 प्रकीर्ण:** प्रमुख ग्रंथों के पूरक।
  - **6 चेदसूत्र:** जैन भिक्षुओं के लिए नियम - जीतकल्प, बृहत्कल्प, निशिथ, महिशीथ, व्यवहार, आचार दशा।
  - **4 मूलसूत्र:** उपदेश, वन में जीवन, भिक्षुओं के कर्तव्य, यम के नियम - दशवैकालिक, उत्तराध्यायन, षडवशयक, पिंडनिरयुक्ति।
  - **2 चूलिकासूत्र:** स्वतंत्र ग्रंथ - नंदी-सूत्र, अनुयागद्वार-सूत्र।

जैन धर्म के महत्वपूर्ण व्यक्तित्व और केंद्र

- **ऐतिहासिक संरक्षक:**
  - सम्प्रति: अशोक के पोते, जैन धर्म के संरक्षक।
  - खारवेल: कलिंग के चेदि शासक ने उदयगिरि और खंडगिरि में विहार बनवाए।
- **जैन धर्म के केंद्र:**
  - **मथुरा:** मंदिर, मूर्तियाँ, अभिलेख।
  - **माउंट आबू:** दिलावरा जैन मंदिर।
  - **श्रवणबेलगोला:** बाहुबली (गोमतेश्वर) प्रतिमा, महामस्तक-अभिषेक उत्सव।
  - **खजुराहो:** हिंदू धर्म और जैन धर्म से संबंधित मंदिर।

श्वेतंबरों और दिगंबरों के बीच अंतर

- **श्वेतंबर:**
  - **सफेद कपड़े** पहनें।
  - इनका मानना है कि **महिलाएं मोक्ष प्राप्त कर सकती हैं।**
  - ज्ञान प्राप्ति के बाद भोजन की अनुमति दें।
  - ऐसा माना जाता है कि **महावीर स्वामी विवाहित** थे।
  - **19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ को एक महिला मानिए।**
- **दिगंबर:**
  - नग्न रहो, तपस्या करो।
  - यह मानना कि महिलाएं मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकतीं।
  - ज्ञान प्राप्ति के बाद भोजन न करें।
  - ऐसा माना जाता है कि महावीर स्वामी अविवाहित थे।
  - 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ को एक पुरुष मानिए।

जैन ग्रंथ और उनके रचयिता

- **कल्पसूत्र:** भद्रबाहु
- **परिष्ट पर्वन:** हेमचंद्र
- **स्याद्वादमंजरी :** मल्लिषेण
- **द्रव्य संग्रह:** नेमीचंद्र
- **तत्वार्थ सूत्र:** उमास्वामी
- **न्यायवतार:** सिद्धसेन दिवाकर
- **न्याय दीपिका:** धर्मभूषण
- **श्लोकवर्तिक:** विद्यानंद स्वामी
- **पंचविशटिका:** पदमनंदी
- **प्रवचनसर:** कुंडकुंड

XIAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 6: शैव, भागवत और शक्ति धर्म

प्राचीन भारतीय ब्रह्मांड विज्ञान के युग:

- **चार युग:** कृतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग।

भागवत और वैष्णव धर्म:

- **उत्पत्ति:**
  - वैष्णव धर्म का विकास भागवत धर्म से हुआ।
  - **छांदोग्य उपनिषद**: भगवान कृष्ण को देवकी के पुत्र के रूप में उल्लेखित किया गया है।
  - **ऋग्वेद**: इसमें विष्णु को आकाश के देवता के रूप में उल्लेख किया गया है।
  - **उत्तर वैदिक काल:** प्रमुख देवता **- प्रजापति, रुद्र और विष्णु।**
  - विष्णु को लोगों का संरक्षक और रक्षक माना जाता है।
- **ऐतिहासिक विकास:**
  - **पतंजलि:** वासुदेव को विष्णु का रूप बताया।
  - विष्णु पुराण: वासुदेव विष्णु का दूसरा नाम है।
  - **पंचरात्र धर्म:** नारायण के साथ कृष्ण-विष्णु संबंध स्थापित हुआ।
  - **महर्षि पाणिनि:** वासुदेव की पूजा और भागवत धर्म का उल्लेख किया।
- **प्रसार और प्रभाव:**
  - प्रारंभ में यह मथुरा और आसपास के क्षेत्रों में प्रचलित था।
  - **मेगास्थनीज:** यूनानी राजदूत ने **'हेराक्लेस' (वासुदेव कृष्ण)** की पूजा का उल्लेख किया।
  - यह भारत के अन्य भागों में भी फैल गया।
  - **विदिशा (बेसनगर) का गरुड़ स्तंभ**: तक्षशिला के यूनानी राजदूत **हेलियोडोरस** ने भागवत धर्म को स्वीकार किया और इस स्तंभ की स्थापना की।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- **गुप्त काल:**
  - गुप्त काल में यह अपने चरम पर पहुंचा।
  - **गुप्त राजा: वैष्णव धर्म के अनुयायी थे;** उन्होंने इसे राजकीय धर्म बना दिया।
  - अधिकांश गुप्त शासकों के पास **'परमभागवत'** की उपाधि होती थी।
  - **गरुड़: गुप्तों का राजकीय चिन्ह।**
  - महरौली स्तंभ: चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा विष्णुपद पर्वत पर विष्णु ध्वज स्थापित करने का उल्लेख है।
  - **भितरी स्तंभ शिलालेख: स्कंदगुप्त** द्वारा स्थापित विष्णु की मूर्ति का उल्लेख है।

- **साहित्य और संत**:
  - **अमर सिंह द्वारा रचित अमरकोश**: इसमें विष्णु के 42 नामों का वर्णन है।
  - पूर्वी वेंगी के चालुक्य शासक: वैष्णव धर्म के अनुयायी, जिनके देवता गरुड़ थे। राज्य चिह्न।
  - **एलोरा में दशावतार मंदिर:** राष्ट्रकूट राजा दंतिदुर्ग द्वारा निर्मित।

- **दशावतार चरित:** क्षेमेन्द्र द्वारा रचित।
- **अलवर संत:** दक्षिण भारत में वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

- **प्रमुख मंदिर:**
  - **जगन्नाथ मंदिर:** पुरी, ओडिशा।
  - दशावतार मंदिर: देवगढ़, उत्तर प्रदेश
  - **विष्णु मंदिर (कंकाली देवी मंदिर):** तिगावा, म.प्र
  - विष्णु मंदिर: एरन, मध्य प्रदेश
  - द्वारिकाधीश मंदिर: मथुरा, यूपी
  - द्वारिकाधीश मंदिर: द्वारका, गुजरात।
- **रथयात्रा:**
  - यह उत्सव प्रतिवर्ष ओडिशा के पुरी में मनाया जाता है।
  - आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को यह आयोजन किया जाता है।
  - भगवान जगन्नाथ (कृष्ण), बलराम (बलभद्र) और सुभद्रा को समर्पित है।

शैव धर्म:

- **उत्पत्ति और ऐतिहासिक संदर्भ:**
  - शैव धर्म: शिव को समर्पित धर्म।
  - **सिंधु घाटी सभ्यता:** शिव पूजा के प्रमाण; मोहनजोदड़ो के मुहर पर योगी की आकृति।
  - **ऋग्वेद**: शिव को 'रुद्र' कहा जाता है; वे अपनी उग्रता के लिए जाने जाते हैं।
  - **अथर्ववेद :** शिव को पशुपति, भव, भूपति आदि कहा गया है।
  - **पतंजलि का महाभाष्य**: ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में शिव पूजा का खुलासा करता है।
- **गुप्त काल:**
  - **चंद्रगुप्त द्वितीय:** प्रधान मंत्री वीरसेन ने उदयगिरि पहाड़ी पर एक शैव गुफा का निर्माण कराया।
  - **कुमारगुप्त :** खोह और करमडांडा में स्थापित है शिव लिंग।
  - **भुमरा और नचनाकुठार:** गुप्त काल के दौरान निर्मित शिव और पार्वती मंदिर।
  - **कालिदास: कुमारसंभवम** में शिव की स्तुति की।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- **मंदिर और संप्रदाय प्रसार:**
    - **कंदरिया महादेव मंदिर**: खजुराहो में चंदेल शासकों द्वारा निर्मित।
    - **एलोरा में कैलाश मंदिर: राष्ट्रकूटों** के शासनकाल में निर्मित।
    - **नयनार: दक्षिण भारत में शैव धर्म** का प्रचार किया; 63 नयनार संत।
    - **चोल शासक:** शिव के अनन्य उपासक; राजराज प्रथम ने तंजौर में राज राजेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।
    - **कुलोत्तुंग प्रथम:** शिव के प्रति श्रद्धा के कारण **विष्णु** की मूर्ति को ध्वस्त कर दिया।
- **बारह ज्योतिर्लिंग:**
    - सोमनाथ, नागेश्वर (द्वारका के पास), केदारनाथ (उत्तराखंड), विश्वनाथ (काशी), वैद्यनाथ (परली, महाराष्ट्र), महाकालेश्वर (उज्जैन), ओंकारेश्वर (एमपी), भीमशंकर (पुणे), त्रयंबकेश्वर (नासिक), घुश्मेश्वर, मल्लिकार्जुन (आंध्र प्रदेश), रामेश्वरम (टीएन)।

- **शैव संप्रदाय**:
    - **चार संप्रदाय:** शैव, पशुपति, कापालिक और कालामुख।
    - **पशुपति:** इसकी उत्पत्ति ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में हुई थी; इसकी स्थापना लकुलिश नामक ब्रह्मचारी ने की थी।
    - **कपालिक:** शिव के अवतार के रूप में भैरव की पूजा करते थे; अनुष्ठानों में मांस खाना, अस्थि कलश लगाना और नर्मुंड पहनना शामिल था।
    - **लिंगायत संप्रदाय**: **वासव** द्वारा स्थापित।
    - **नाथपंथ संप्रदाय:** मत्स्येंद्र नाथ द्वारा शुरू किया गया; बाबा गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित।
- **प्रमुख मंदिर:**
    - **राज राजेश्वर मंदिर:** तंजौर, तमिलनाडु।
    - शिव मंदिर: भुमरा, मध्य प्रदेश
    - **नटराज मंदिर:** चिदम्बरम, तमिलनाडु।
    - **विरुपाक्ष मंदिर:** हम्पी, कर्नाटक।
    - **विश्वनाथ मंदिर:** वाराणसी, यूपी

शाक्त संप्रदाय:

- **उत्पत्ति और ऐतिहासिक संदर्भ:**
    - शक्ति देवी की पूजा की जाती थी।
    - **सिंधु घाटी सभ्यता: मातृ देवी की पूजा** के प्रमाण।
    - वैदिक साहित्य: इसमें सरस्वती, अदिति, उषा, लक्ष्मी जैसी देवियों का उल्लेख है।
    - महाभारत एवं पुराण: देवी महात्म्य का विस्तृत वर्णन।
- **प्रमुख मंदिर**:
    - वैष्णो देवी मंदिर: जम्मू।
    - विंध्यवासिनी देवी मंदिर: विंध्याचल।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- चौसठ योगिनी का मंदिर: भेड़ाघाट, म.प्र
- पार्वती मंदिर: नचना-कुठार, म.प्र
- कामाख्या मंदिर: असम।
- दक्षिणेश्वर काली मंदिर: कोलकाता।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 7: छठी शताब्दी ईसा पूर्व की राजनीतिक स्थिति

राजनीतिक स्थिति:
छठी शताब्दी ईसा पूर्व उत्तरी भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण काल था, जिसमें सोलह प्रमुख राज्य अस्तित्व में थे, जिन्हें 'सोलह (षोडश) महाजनपद' के नाम से जाना जाता है। इन राज्यों का दस्तावेजीकरण अंगुत्तरनिकाय जैसे बौद्ध साहित्य और जैन साहित्य जैसे ग्रंथों में मिलता है।

भगवतीसूत्र में 22 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है, हालांकि विभिन्न स्रोतों में इनके नामों में कुछ भिन्नताएँ हैं। पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी 22 महाजनपदों का उल्लेख है।

महाजनपद और उनकी राजधानियाँ:

1. **कुरु:**
   - **आधुनिक स्थान:** मेरठ, दिल्ली, और अहिच्छत्र (थानेस्वर, उत्तरी पांचाल)
   - **राजधानी:** हस्तिनापुर
2. **पांचाल:**
   - **आधुनिक स्थान**: बरेली, बदायूँ और फर्रुखाबाद
   - **राजधानियाँ:** अहिच्छत्र (उत्तर पांचाल) और काम्पिल्य (दक्षिण पांचाल)
3. **शूरसेन:**
   - **आधुनिक स्थान**: मथुरा के आसपास के क्षेत्र
   - **राजधानी:** मथुरा
4. **वत्स:**
   - **आधुनिक स्थान:** इलाहाबाद और बांदा
   - **राजधानी:** कौशांबी
5. **कोशल:**
   - **आधुनिक स्थान:** अवध क्षेत्र (फैजाबाद मंडल)
   - **राजधानियाँ:** साकेत और श्रावस्ती
6. **मल्ल:**
   - **आधुनिक स्थान:** देवरिया जिला
   - **राजधानियाँ:** कुशीनगर और पावा
7. **काशी:**
   - **आधुनिक स्थान:** वाराणसी
   - **राजधानी:** वाराणसी
8. **अंग:**

X IAS EDUCATION

- **आधुनिक स्थान:** भागलपुर और मुंगेर
- **राजधानी:** चंपा

9. **मगध:**
    - **आधुनिक स्थान:** दक्षिण बिहार (पटना और गया जिले)
    - **राजधानी:** गिरिवराज या राजगीर
10. **वज्जी:**
    - **आधुनिक स्थान:** मुजफ्फरपुर और दरभंगा
    - **राजधानियाँ:** वैशाली और जनकपुरी

11. **चेदि :**
    - **आधुनिक स्थान**: बुंदेलखंड
    - **राजधानी:** कोत्थीवती/सुक्तिमाती
12. **मत्स्य:**
    - **आधुनिक स्थान:** जयपुर
    - **राजधानी:** विराटनगर
13. **अश्मक:**
    - **आधुनिक स्थान:** गोदावरी घाटी (आंध्र प्रदेश)
    - **राजधानी:** पोट्टन/पोट्टिल
14. **अवंती:**
    - **आधुनिक स्थान:** पश्चिमी और मध्य मालवा क्षेत्र
    - **राजधानियाँ:** उज्जैन (उत्तरी अवंती) और महिष्मती (दक्षिणी अवंती)
15. **गांधार:**
    - **आधुनिक स्थान:** पेशावर और रावलपिंडी
    - **राजधानियाँ:** तकशिला
16. **कंबोज:**
    - **आधुनिक स्थान:** दक्षिण पश्चिम कश्मीर
    - **राजधानियाँ:** रायपुर/हाटक और राजौरी

प्रमुख ऐतिहासिक घटनाक्रम और राजवंश:

- **वैशाली:** बुद्ध काल का सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली गणराज्य के रूप में जाना जाता है।
- **बिम्बिसार (हर्यंका वंश):** बिम्बिसार (544-492 ईसा पूर्व) एक प्रमुख शासक थे जिन्होंने हर्यंका वंश की स्थापना की और मगध साम्राज्य की नींव रखी।
- **अजातशत्रु:** बिम्बिसार के पुत्र, अजातशत्रु (492-460 ईसा पूर्व), जो मगध साम्राज्य का विस्तार करने और राजधानी को पाटलिपुत्र में स्थानांतरित करने के लिए जाने जाते हैं।
- **नंदा वंश**: **महापद्मनंद** एक महत्वपूर्ण शासक थे जिन्होंने राज्य का विस्तार किया और **'एकराता और एकछत्र'** की उपाधि धारण की।
- **मौर्य वंश:** चाणक्य की सहायता से नंदा वंश को पराजित करने के बाद **चंद्रगुप्त मौर्य** द्वारा स्थापित। अशोक जैसे शासकों के अधीन मौर्य साम्राज्य अपनी प्रशासनिक दक्षता और समृद्धि के लिए जाना जाता था।

प्रमुख सांस्कृतिक और राजनीतिक पहलू:

- **पाटलिपुत्र: उदयिन द्वारा स्थापित**, यह मौर्य और गुप्त सहित विभिन्न राजवंशों के दौरान एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र बन गया।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- **काशी:** एक प्रमुख और समृद्ध नगर-राज्य जो अपनी संपत्ति और पड़ोसी राज्यों के साथ प्रतिद्वंद्विता के लिए जाना जाता था।
- **चेदि महाजनपद:** यह आधुनिक बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित था और इसकी राजधानी सूक्तिमती (या सोत्थिबती) थी।
- **खारवेल:** कलिंग के चेदि वंश के एक उल्लेखनीय सम्राट, जो बुनियादी ढांचे में अपने योगदान और जैन धर्म के समर्थन के लिए जाने जाते थे।
- **कालपी:** ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में राजा वासुदेव द्वारा निर्मित एक प्राचीन शहर।

मुद्रा निर्माण और साहित्य:

- **पंच चिह्न वाले सिक्के (आहट के सिक्के)**: भारत में पाए जाने वाले सबसे पुराने चांदी के सिक्के, जिनका उपयोग छठी शताब्दी ईसा पूर्व और मौर्य काल के बीच किया जाता था।
- **पाणिनी:** संस्कृत व्याकरण में अपने कार्यों के लिए प्रसिद्ध, विशेष रूप से अष्टाध्यायी के लिए, जिसमें 4000 सूत्र शामिल हैं।

राजा और उनका शासनकाल:

राजा	शासनकाल (वर्षों में)
शिशुनाग	40
काकवर्णा	26
क्षेमधर्मन	36
क्षेमजीत	24
बिम्बिसारा	28
अजातशत्रु	27
दर्शक	24
उदयिन	33
नंदिवर्धन	40
महनंदिन	43
महापदमानंद	100 (कुछ विद्वानों के अनुसार 40 वर्ष)

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 8: यूनानी आक्रमण

हखामानी साम्राज्य का उदय

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में, **कुरुश (साइरस द्वितीय)** (558-529 ईसा पूर्व) नामक एक महत्वाकांक्षी शासक ने मध्य **ईरान** में **हखमनी साम्राज्य** की स्थापना की। इस काल में फारस और भारत के बीच महत्वपूर्ण संबंधों की शुरुआत हुई। **दारियस प्रथम (522-486 ईसा पूर्व)** के शासनकाल के महत्वपूर्ण शिलालेख, जैसे कि **बेहिस्तुन, पर्सेपोलिस और नक्शा-ए-रुस्तम** में पाए गए शिलालेख, इन संबंधों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं। **बेहिस्तुन शिलालेख** में विशेष रूप से दारियस के साम्राज्य के **23 प्रांतों** का उल्लेख है, जिनमें **भारत को बीसवां प्रांत** बताया गया है।

भारत पर फारसी प्रभाव

फ़ारसी प्रभाव के कारण ईरानी अरामी लिपि से व्युत्पन्न 'खरोष्ठी' लिपि का विकास हुआ। यह लिपि उत्तर-पश्चिमी भारत में फ़ारसी और भारतीय सभ्यताओं के बीच व्यापक आदान-प्रदान के परिणामस्वरूप विकसित हुई।

नंदा वंश और उसका पतन

पुराणों और बौद्ध ग्रंथों में महापद्मनंद के **आठ उत्तराधिकारियों** के नंदा वंश के शासनकाल का विस्तृत वर्णन मिलता है। इस वंश के अंतिम शासक धनानंद सिकंदर महान के समकालीन थे। यूनानी लेखकों ने उन्हें **अग्रमीज कहा है और ज़ेनोफ़ोन ने उन्हें अत्यंत धनी व्यक्ति बताया है**। भद्राशल उनके सेनापति थे।

सिकंदर महान का आक्रमण

326 ईसा पूर्व में हखमनी साम्राज्य को हराने के बाद, सिकंदर महान ने एक विशाल सेना के साथ भारत अभियान शुरू किया। उनका अभियान दो वर्षों तक चला और वे **325 ईसा** पूर्व में पाताल से ग्रीस लौट आए। इस दौरान उनका सामना कई भारतीय राज्यों और गणराज्यों से हुआ।

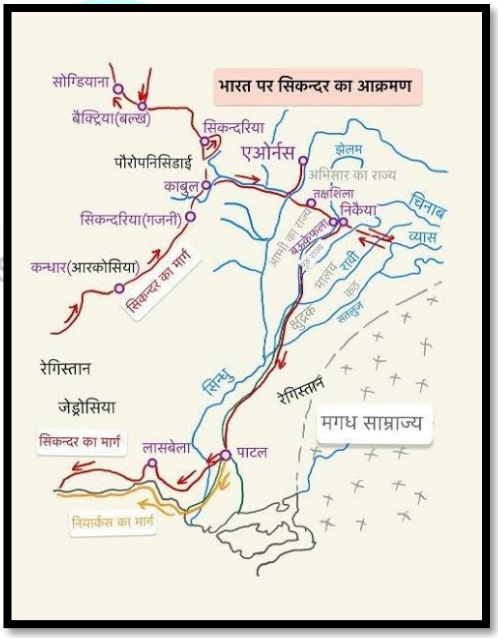

अश्वक गणराज्य

सिकंदर के आक्रमण के समय अश्वक एक सीमावर्ती गणराज्य था, जिसकी राजधानी मस्सागा थी। यूनानी लेखकों के अनुसार, युद्ध में कई पुरुषों के मारे जाने के बाद मस्सागा की महिलाओं ने सिकंदर के विरुद्ध हथियार उठा लिए। कहा जाता है कि सिकंदर की सेना ने इस शहर की सभी महिलाओं को मार डाला, जिससे सिकंदर के भयंकर प्रतिरोध का पता चलता है।

पुरु का राज्य

पुरु (पोरस) का राज्य झेलम और चिनाब नदियों के बीच स्थित था। सिकंदर ने झेलम नदी के तट पर पोरस को पराजित किया, लेकिन उसकी वीरता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसे फिर से शासक बना दिया और उसे अतिरिक्त क्षेत्र भी प्रदान किए।

मुख्य निष्कर्ष और अतिरिक्त जानकारी

- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** हखमनी साम्राज्य के दौरान फारस और भारत के बीच हुए अंतर्संबंधों के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुए, जिनमें लिपियों और प्रशासनिक प्रथाओं का विकास शामिल है।
- **सैन्य रणनीति:** सिकंदर के आक्रमण ने यूनानियों और दोनों की उन्नत सैन्य रणनीतियों का प्रदर्शन किया।
- भारतीय सेनाओं के बीच, झेलम की लड़ाई विशेष रूप से अपने रणनीतिक महत्व और पोरस द्वारा प्रदर्शित शौर्य के लिए प्रसिद्ध है।
- **आर्थिक प्रभाव:** व्यापक अभियानों और उसके बाद भारत के कुछ हिस्सों में यूनानी शासन की स्थापना का काफी आर्थिक

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING S

प्रभाव पड़ा, जिससे पूर्व और पश्चिम के बीच व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला।

- **ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण:** यूनानी और फारसी ऐतिहासिक वृत्तांत इस अवधि के दौरान प्राचीन भारत की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

प्रमुख व्यक्ति और घटनाएँ

- **कुरुष (साइरस द्वितीय):** मध्य ईरान में हखामनी साम्राज्य के संस्थापक।
- **दारा प्रथम:** उनके शिलालेख उनके शासनकाल के अंतर्गत आने वाले प्रांतों, जिनमें भारत भी शामिल है, के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं।
- **धनानंद:** नंदा वंश के अंतिम शासक, जो अपनी अपार संपत्ति के लिए जाने जाते थे और जिनका उल्लेख यूनानी लेखकों ने भी किया है।
- **सिकंदर महान:** उन्होंने भारत पर यूनानी आक्रमण का नेतृत्व किया, जिसमें उन्हें भारतीय गणराज्यों और राज्यों से भयंकर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।
- **पोरस:** सिकंदर द्वारा पराजित राजा, बाद में अपनी वीरता के कारण पुनः गद्दी पर बैठा।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 9: मौर्य साम्राज्य

चंद्रगुप्त मौर्य: भारत को एकजुट करने वाला

- **प्रारंभिक शासनकाल और एकीकरण:**
  - चंद्रगुप्त मौर्य को भारत के महानतम सम्राटों में से एक माना जाता है, जिन्होंने बिखरे हुए छोटे-छोटे राज्यों को एक विशाल साम्राज्य में एकीकृत किया, जो आधुनिक ईरान तक फैला हुआ था। इस राजनीतिक एकीकरण ने भारत में केंद्रीकृत प्रशासन की शुरुआत की।
  - **कौटिल्य, जिन्हें विष्णुगुप्त और चाणक्य** के नाम से भी जाना जाता है, मौर्य वंश की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। प्रधानमंत्री, सलाहकार और प्रमुख पुरोहित के रूप में उन्होंने "**अर्थशास्त्र**" की रचना की, जो प्राचीन भारत में राजनीति विज्ञान और राज्य-प्रशासन पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है।
- **विस्तार एवं प्रशासन:**
  - **रुद्रदमन** (150 ईस्वी) के **जूनागढ़ शिलालेख** में चंद्रगुप्त के अधीन एक प्रांतीय गवर्नर **पुष्यगुप्त** द्वारा सिंचाई के लिए एक बांध के निर्माण का उल्लेख है, जो दर्शाता है कि पश्चिमी भारत मौर्य साम्राज्य का हिस्सा था।
  - चंद्रगुप्त ने सिकंदर के पूर्वी भाग के शासक **सेल्यूकस निकेटर** को 305 ईसा पूर्व में, पराजित किया। उसने अपने साम्राज्य को और मजबूत किया।
  - **विशाखदत्त** द्वारा लिखित **"मुद्राराक्षस"** में चंद्रगुप्त को नंदराज के पुत्र के रूप में वर्णित किया गया है और उन्हें **"वृशाल"** और "**कुलहीन**" कहा गया है।
- **मान्यता एवं लेखा-जोखा:**
  - **विलियम जोन्स** ने सबसे पहले **सैंड्रोकोटोस** की पहचान चंद्रगुप्त मौर्य के रूप में की थी। **एरियन और प्लूटार्क** ने उन्हें **एंड्रोकोटस** के नाम से संबोधित किया, और **जस्टिन** ने **सिकंदर महान** के साथ उनकी मुलाकात का दस्तावेजीकरण किया।

बिंदुसार: एकीकृत करने वाला

- **शासन और संबंध:**
  - **यूनानी लेखकों** ने बिंदुसारा को '**अमित्रोचेट्स**' कहा है, जो संस्कृत शब्द '**अमित्रघाट**' (शत्रुओं का संहारक) से लिया गया है। जैन ग्रंथों में उन्हें '**सिंहासेना**' कहा गया है।
  - बिंदुसार को तक्षशिला में एक विद्रोह का सामना करना पड़ा, जिसे उनके पुत्र अशोक ने दबा दिया। उन्होंने राजनयिक संबंध बनाए रखे और **एंटिओकस से देइमाचस और मिस्र के टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फस से डायोनिसस को राजदूत** के रूप में स्वीकार किया।
- **प्रशासन और शासन:**
  - अपने पिता के शासनकाल के दौरान, अशोक को **अवंती (उज्जायिनी)** का वायसराय नियुक्त किया गया था।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अशोक: महान सम्राट

- **प्रारंभिक शासनकाल और नीतियां:**
  - अशोक लगभग **269 ईसा** पूर्व मगध के सिंहासन पर आसीन हुए और उन्हें **'देवनम्पिया' और 'देवनपियादसी'** (देवताओं की प्रियतमा) नाम से जाना जाता था।
  - उनका **'धम्म'** मानवता के कल्याण के उद्देश्य से नैतिक सिद्धांतों पर आधारित था, न कि किसी विशिष्ट समुदाय से बंधा हुआ।

- **बौद्ध प्रभाव:**
  - सिंहली ग्रंथों **"दीपवंश" और "महावंश"** के अनुसार, अशोक के शासनकाल के दौरान 250 ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध परिषद का आयोजन किया गया था। इस परिषद का मुख्य उद्देश्य बौद्ध संघ को शुद्ध करना था और इसकी अध्यक्षता **मोग्गलिपुत्त तिस्सा** ने की थी।
  - उनके शिलालेखों को शिला शिलालेखों, स्तंभ शिलालेखों और गुफा शिलालेखों में वर्गीकृत किया गया है, जो **शाहबाजगढ़ी, मनसेहरा, कालसी और अन्य विभिन्न स्थानों** पर पाए गए हैं।
- **अवसंरचना और कल्याण:**
  - अशोक ने जनता के लिए अस्पताल, सार्वजनिक उद्यान और कुएँ बनवाए। उन्होंने सारनाथ स्तंभ का भी निर्माण करवाया, जिसका सिंह शीर्ष अब भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है।
  - उनके शिलालेख, जो मुख्य रूप से प्राकृत और ब्राह्मी लिपियों में हैं, कुछ स्थानों पर खरोष्ठी और अरामी लिपियों में भी मिलते हैं।
- **कलिंग युद्ध और पश्चाताप:**
  - कलिंग युद्ध अशोक के शासनकाल का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। **तेरहवें शिलालेख** में युद्ध के बाद उनका पश्चाताप और उसके बाद बौद्ध धर्म को अपनाना, इसका वर्णन किया गया है।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

मौर्यकालीन प्रशासन और समाज

- **प्रशासनिक संरचना:**
  - मौर्य प्रशासन अत्यधिक संगठित था जिसमें युक्ता **(जिला अधिकारी), राज्जुक (सर्वेयर), प्रादेशिक (विभागीय आयुक्त)** और अन्य जैसे अधिकारी होते थे।
  - अर्थशास्त्र में **पौतवाध्यक्ष (वजन और माप के प्रभारी) और पण्याध्यक्ष (वाणिज्य विभाग के प्रमुख)** जैसे विभिन्न प्रशासनिक पदों का उल्लेख है।
- **राजस्व और कराधान:**
  - राजस्व संग्रह का नियमन समाहर्ता द्वारा किया जाता था, जिसमें **'भागा' (भूमि कर) और 'बलि' (अतिरिक्त राजस्व)** जैसे कर शामिल थे।
  - एग्रोनोमोई जिला अधिकारी थे जो विभिन्न प्रशासनिक कार्यों के लिए जिम्मेदार थे।
- **न्याय व्यवस्था:**
  - मौर्य साम्राज्य में दो प्रकार की मुख्य अदालतें कार्यरत थीं: **धर्मस्थीय** (दीवानी/नागरिक न्यायालय, जहाँ पारिवारिक व संपत्ति विवाद सुलझते थे) और **कंटकशोधन** (फौजदारी/आपराधिक न्यायालय, जहाँ राज्य के विरुद्ध अपराध और गंभीर मामलों की सुनवाई होती थी)
  - नगर प्रशासन नगरपालिकाओं द्वारा संचालित होता था, जिनमें **'नागरक' या 'पुरमुख्य' (मुख्य नगर अधिकारी)** जैसे अधिकारी होते थे।
- **सामाजिक संरचना:**
  - यूनानी इतिहासकार और राजदूत **मेगास्थनीज** ने मौर्य समाज का दस्तावेजीकरण किया और इसे

सात श्रेणियों में विभाजित किया: **दार्शनिक, किसान, चरवाहे, कारीगर, सैनिक, निरीक्षक और कर निर्धारक**।
    - उस समाज में दास प्रथा प्रचलित नहीं थी और व्यवसाय जाति के अनुसार निर्धारित थे।
- **सांस्कृतिक योगदान:**
    - मौर्य सम्राटों ने संस्कृति, कला और साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अशोक द्वारा निर्मित सांची स्तूप मौर्य वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
    - मेगास्थनीज की रचना "**इंडिका**" समकालीन भारत और पाटलिपुत्र के प्रशासन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है।

मौर्य साम्राज्य का पतन

- राजवंश का अंत:
    - मौर्य वंश के अंतिम **सम्राट बृहद्रथ** की हत्या उनके सेनापति **पुष्यमित्र शुंग** ने कर दी थी, जिसने शुंग वंश की स्थापना की थी।
    - शुंग वंश का शासन तब तक जारी रहा जब तक कि **देवभूति** की हत्या उनके **मंत्री वासुदेव** द्वारा हीं कर दी गई, जिससे शुंग शासन का अंत हो गया।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 10: मौर्योत्तर काल

शिलालेख और सिक्के

- **रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख (130-150 ई.)**
  - यह गुजरात के **गिरनार** पहाड़ियों में पाया जाता है।
  - **ब्राह्मी** लिपि में लिखा गया है।
  - पूर्ण संस्कृत में लिखा गया सबसे प्राचीन शिलालेख।
  - **काव्य शैली** का उदाहरण।
- **कुषाण सम्राट विम कडफिसेस**
  - भारत में नियमित उपयोग के लिए सोने के सिक्के प्रचलन में लाए गए।
  - **कुजुला कडफिसेस** तांबे के सिक्के प्रचलन में लाते थे।
  - **यौधेय** काल के तांबे के सिक्कों पर छह मुख वाले देवता **कार्तिकेय और मोर** का चित्र अंकित था।
  - भारत-ग्रीक राजाओं ने सर्वप्रथम **उत्तर-पश्चिमी भारत** में सोने के सिक्के प्रचलन में लाए।
  - **कुषाण सम्राटों** ने सोने और तांबे के सिक्कों का प्रचलन बढ़ाया।

कैलेंडर और कालक्रम

- **कनिष्क का शिलालेख**
  - सारनाथ में बुद्ध के शिलालेख का वर्ष: **81 ईस्वी**।
  - कनिष्क के राज्याभिषेक के **तीन वर्ष** बाद स्थापित।
  - राज्याभिषेक की विवादास्पद तिथि; 1913 और 1960 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन।
  - शक संवत की शुरुआत **78 ईस्वी में हुई थी**, माना जाता है कि इसकी शुरुआत कनिष्क ने की थी।
- **विक्रम संवत और शक संवत**
  - **विक्रम संवत (57 ईसा पूर्व):** वर्तमान वर्ष में 57 जोड़ें।
  - **शक संवत (78वीं शताब्दी):** वर्तमान वर्ष से 78 घटाएँ।
  - **चैत्र** भारतीय राष्ट्रीय पंचांग का पहला महीना है, जो आमतौर पर 22 मार्च से शुरू होता है या लीप वर्ष में **21 मार्च से** शुरू होता है।

साहित्य और विद्वान

- **अश्वघोष**
  - कनिष्क के राजकवि।
  - **रचनाएँ:** सौंदरानंद, बुद्धचरित, और सारिपुत्रप्रकरण।
- **कनिष्क के दरबार में उपस्थित अन्य विद्वान**
  - पार्श्व, नागार्जुन और चरक (दरबारी चिकित्सक)।
  - वासुमित्र, जिन्होंने चौथी बौद्ध परिषद की अध्यक्षता की थी।
- **महर्षि पतंजलि**
  - शुंग काल से संबंधित।
  - महाभाष्य के लेखक।

साम्राज्य और व्यापार

- **कुषाण साम्राज्य**
  - इसका विस्तार चीन के उत्तरी तुरपान और कश्मीर से लेकर विंध्य पर्वतमाला (दक्षिण) और उत्तरी अफगानिस्तान (पश्चिम) से लेकर पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार तक फैला हुआ है।
  - एरिथ्रियन सागर के पेरिप्लस और अरिकामेडु से बंदरगाहों और व्यापारिक केंद्रों के साक्ष्य।

For more subjects Join us at telegram: https://t.me/addlist/fdKL4cb2W7I2YTk1 Visit us: www.xias.in

- व्यापार फारस की खाड़ी और लाल सागर के माध्यम से होता था, लेकिन नौसैनिक बलों के कोई साक्ष्य नहीं मिले।

- **कनिष्क के सैन्य और राजनयिक संबंध**
  - **चीनी राजकुमारी हान** के साथ विवाह गठबंधन का प्रयास किया गया।
  - एक असफल सैन्य अभियान के बाद 86 ईस्वी में चीनी सेनाओं द्वारा पराजित हुए।

कला और सामाजिक रीति-रिवाज

- **गांधारा स्कूल ऑफ आर्ट**
  - कुषाण काल में विकसित।
  - गांधार और मथुरा शैलियों पर आधारित।
  - **ग्रीक कला** से प्रभावित।
  - **कनिष्क** द्वारा प्रोत्साहित और संरक्षित।

- **सामाजिक परिवर्तन**
  - **बाल विवाह की शुरुआत कुषाण काल** (पहली शताब्दी) में हुई थी।
  - महिलाओं के लिए **उपनयन संस्कार** (जनेऊ बंधन समारोह) का उन्मूलन।

आक्रमणकारी और राजवंश

- **आक्रमणकारियों का कालक्रम**
  - यूनानी (326 ईसा पूर्व; सिकंदर)।
  - साकास (सेथियन - ईसा पूर्व पहली शताब्दी)।
  - कुषाण काल (प्रथम शताब्दी ईस्वी)।
  - फारसी शासक दारियस-I (522-486 ईसा पूर्व) पहला आक्रमणकारी था।

- **उल्लेखनीय शासक और राजवंश**
  - **स्ट्रैटो-II:** सीसे के सिक्के जारी किए गए, कार्यकाल 25 ईसा पूर्व से 10 ईस्वी तक माना जाता है।
  - **पुष्यमित्र शुंग:** 184 ईसा पूर्व में बृहद्रथ की हत्या करके शुंग राजवंश की स्थापना की; दो अश्वमेघ यज्ञ किये।
  - **सातवाहन राजवंश:** कण्व राजा सुशर्मा की हत्या के बाद सिमुक द्वारा स्थापित; पैठन या प्रतिष्ठान में राजधानी।
  - **गौतमीपुत्र शातकर्णी:** ब्राह्मणवाद के संरक्षक, वर्ण व्यवस्था के रक्षक।
  - **चेदि वंश के खारवेला:** कलिंग के राजा, जिनके बारे में हाथीगुम्फा शिलालेख से जानकारी मिलती है।

अतिरिक्त तथ्य

- **हाथीगुम्फा शिलालेख**
  - इसमें खारवेला के जीवन और शासनकाल का विस्तृत विवरण दिया गया है।
  - उदयगिरि और खंडगिरि गुफाएं, ओडिशा में स्थित हैं।
  - खारवेल के शासनकाल के 38वें वर्ष तक के अभिलेख, जिनमें उनके शासनकाल के 13 वर्ष भी शामिल हैं।

X IAS EDUCATION . SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 11: गुप्त और उत्तर-गुप्त काल

स्थापना और विस्तार

- **संस्था की स्थापना और प्रारंभिक शासक:**
  - **श्रीगुप्त** (लगभग 275 ईस्वी): गुप्त वंश की स्थापना की।
  - **चंद्रगुप्त प्रथम** (319-335 ईस्वी): प्रथम शक्तिशाली शासक, जिन्होंने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की। उन्होंने 319-20 ईस्वी में गुप्त संवत की शुरुआत की।
- **समुद्रगुप्त (335-375 ईस्वी):**
  - अपने सैन्य विजय अभियानों के लिए इतिहासकार **ए.वी. स्मिथ** ने उन्हें **'भारत का नेपोलियन'** कहा था।
  - **प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख):** हरिसेना द्वारा लिखित, इसमें समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन है। मूल रूप से **अशोक द्वारा स्थापित इस स्तंभ पर अशोक, उनकी रानी करुवाकी और बाद में जहांगीर द्वारा फारसी भाषा में शिलालेख** भी अंकित हैं।

प्रमुख शासक और उनकी उपलब्धियाँ

- **चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (375-415 ई.):**
  - शक राजा **रुद्रसिंह तृतीय** को पराजित करने के बाद उन्हें **'सकारी'** के नाम से जाना जाने लगा।
  - **'रूपका'** नामक चांदी के सिक्के जारी किए गए।
  - कालिदास, धन्वंतरि और वराहमिहिर सहित नवरत्नों (नौ रत्नों) के संरक्षक।
  - **मेहरौली लौह स्तंभ**: शिलालेख में विष्णु के प्रति उनकी भक्ति का उल्लेख है।
- **कुमारगुप्त प्रथम 'महेंद्रदित्य' (415-455 ईस्वी):** चंद्रगुप्त द्वितीय के सबसे बड़े पुत्र।
- **स्कंदगुप्त (455-467 ईस्वी):** पहले हूण आक्रमण को विफल किया, जिसका विवरण भीतरी स्तंभ शिलालेख में मिलता है।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

आर्थिक और सांस्कृतिक विकास

- **व्यापार और अर्थव्यवस्था:**
  - **प्रमुख बंदरगाह:** बंगाल में ताम्रलिप्ति और पश्चिमी तट पर भृगु कच्छ (भरूच)।
  - व्यापार को विनियमित करने और मानकों को बनाए रखने में गिल्डों ने अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **सांस्कृतिक उत्कर्ष:**
  - गुप्त काल की कला और वास्तुकला: विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति के कारण इसे स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है।
  - गणित और खगोल विज्ञान: **आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त** ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्यभट्ट का **'आर्यभटीय'** त्रिकोणमितीय कार्यों पर चर्चा करता है।

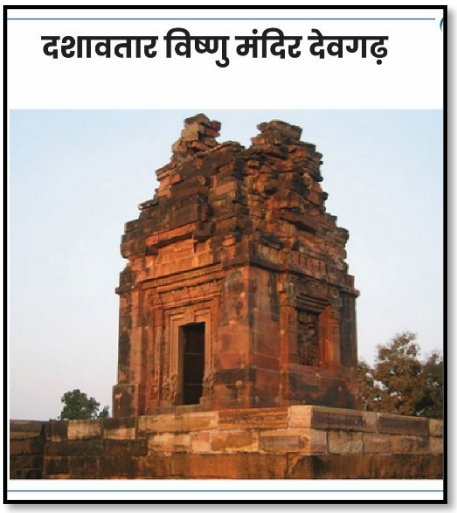

- **मुद्रा:**
  - **गरुड़, धनुर्धर और अश्वमेध** सहित कई प्रकार के सोने के सिक्के जारी किए गए थे।
  - फाह्यान ने दैनिक लेन-देन के लिए कौड़ियों के उपयोग का उल्लेख किया है।

सामाजिक और धार्मिक पहलू

- **सामाजिक संरचना:**
  - **सती प्रथा:** इसका पहला उल्लेख एरन शिलालेख (510 ईस्वी) में मिलता है।
  - **समाज में महिलाओं की स्थिति:** महिलाओं ने एक गौण (द्वितीयक) भूमिका निभाई, जैसा कि शूद्रक की कृति **'मृच्छकटिकम्'** जैसे साहित्यों में देखा जा सकता है।
- **धर्म और दर्शन:**
  - हिंदू दर्शन की छह प्रणालियाँ (सद्दर्शन): **सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत।**
  - शंकराचार्य: अद्वैत वेदांत का प्रचार किया और चार प्रमुख मठ केंद्रों की स्थापना की।

गुप्त काल के बाद के राजवंश

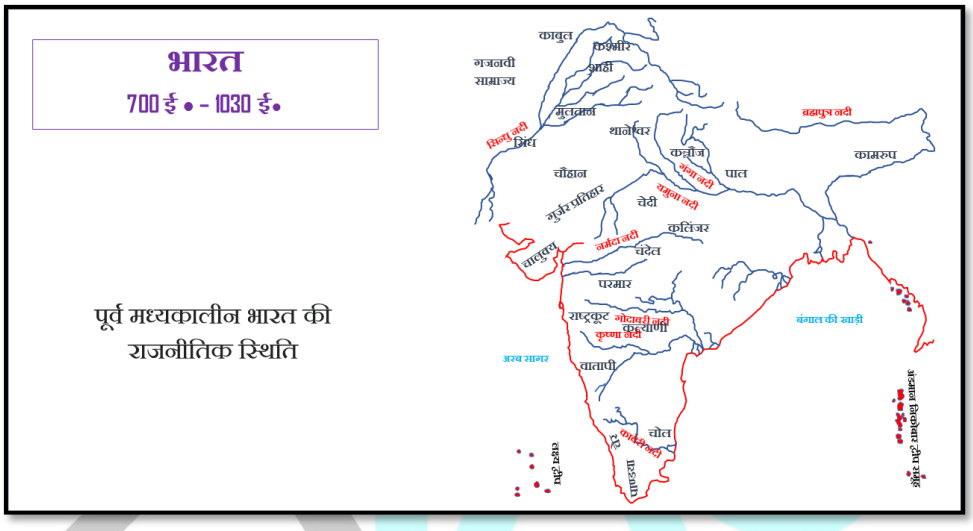

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- **वाकाटक राजवंश:**
  - **प्रवरसेन प्रथम** (275-335 ई.): अश्वमेध यज्ञों का संचालन किया।
  - **प्रवरसेन द्वितीय:** 'सेतुबंध' नामक ग्रंथ की रचना की।
- **गुर्जर-प्रतिहार वंश:**
  - **नागभट्ट प्रथम** (730-756 ई.) द्वारा स्थापित, जिन्होंने सिंध के अरब शासक को हराया था।
  - **कन्नौज त्रिकोणीय संघर्ष:** इसमें प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट शामिल थे।
- **राष्ट्रकूट वंश:**
  - 736 ई. में दंतिदुर्ग द्वारा स्थापित। मान्यखेता में राजधानी।
  - अमोघवर्ष प्रथम (800 ईस्वी): अपनी साहित्यिक और सैन्य उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध।

पतन और बाद के घटनाक्रम

- **हुना आक्रमण:**
  - मिहिरकुल के नेतृत्व में, जिसे मालवा के यशोधर्मन (528 ईस्वी) ने हराया था।
- **हर्ष का शासनकाल (606-647 ईस्वी):**
  - वे धार्मिक सहिष्णुता और प्रयाग में स्थापित 'महामोक्ष परिषद' के लिए जाने जाते हैं।
  - ह्वेनसांग का वृत्तांत: इसमें हर्ष के प्रशासन और मथुरा तथा वाराणसी जैसे शहरों की समृद्धि का विस्तृत वर्णन है।
- **हर्ष की मृत्यु के बाद कन्नौज का संघर्ष:**
  - त्रिकोणीय मुकाबला: पालों, गुर्जर-प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के बीच, अंततः प्रतिहारों ने जीत

हासिल की।

प्रमुख सांस्कृतिक योगदान

- **दर्शन और साहित्य:**
  - पतंजलि के योग सूत्र: **अष्टांग योग** (आठ अंगों वाला योग) का वर्णन करते हैं।
  - कणाद का वैशेषिक संप्रदाय: भारतीय दर्शन में परमाणु सिद्धांत का परिचय दिया।
- **नालंदा विश्वविद्यालय:**
  - सन् **1193 ईस्वी में बख्तियार खिलजी** द्वारा इसे लूटा गया, जिससे भारत में बौद्ध धर्म में एक महत्वपूर्ण गिरावट आई।

अतिरिक्त महत्वपूर्ण बिंदु

- **शतरंज (चतुरंग):** इसकी उत्पत्ति गुप्त काल में भारत में हुई, फिर यह ईरान और उसके बाद यूरोप पहुंचा।
- **हिंदू दर्शन:**
  - **सांख्य दर्शन:** महर्षि कपिल द्वारा स्थापित, यह मोक्ष के लिए आत्मज्ञान पर जोर देता है।
  - **योग:** महर्षि पतंजलि द्वारा स्थापित, इसमें आठ आध्यात्मिक अभ्यास शामिल हैं।
  - **न्याय:** गौतम द्वारा प्रतिपादित, यह तर्क और निर्णय लेने पर केंद्रित है।
  - **मीमांसा**: कर्म मीमांसा के नाम से जानी जाने वाली यह पद्धति वैदिक अनुष्ठानों और कर्म सिद्धांत पर जोर देती है।
  - **वेदांत:** उपनिषदों, ब्रह्मसूत्र और भगवद गीता पर आधारित भारतीय विचारधारा की पराकाष्ठा।
  - **वैशेषिक संप्रदाय:** महर्षि कणाद द्वारा स्थापित, जिसने परमाणु सिद्धांत का परिचय दिया।
- **प्रतिहारा वंश:**
  - पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल ग्रंथ और बाणभट्ट के हर्षचरित में इसका उल्लेख मिलता है।
  - संस्थापक: **नागभट्ट प्रथम (730-756 ई.)**, सिंध के अरब शासक को हराने के लिए जाने जाते हैं।
- **राष्ट्रकूट वंश:**
  - **दंतिदुर्ग** द्वारा 736 ईस्वी में स्थापित। हिरण्यगर्भ यज्ञ का संचालन किया।
  - **अमोघवर्ष प्रथम:** 800 ईस्वी में जन्मे, सैन्य और साहित्यिक उपलब्धियों के लिए जाने जाते हैं।
- **हर्ष की राजधानी और प्रशासन:**
  - अपनी बहन **राज्यश्री** की सहायता के लिए राजधानी को **कन्नौज** स्थानांतरित किया।
  - यहां **ह्वेनसांग** की अध्यक्षता में विशाल धार्मिक परिषदों का आयोजन किया गया था।
- **ह्वेनसांग का योगदान:**
  - मथुरा और वाराणसी में वस्त्रों के उत्पादन का विस्तृत विवरण दिया गया है।
  - थानेश्वर में व्यापारिक समृद्धि पर प्रकाश डाला गया।
- **कन्नौज पोस्ट-हर्ष:**
  - यह पालों, प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के बीच सत्ता संघर्ष का केंद्र बिंदु बन गया।
- **चीनी यात्री:**
  - **इत्सिंग:** 671-672 ईस्वी में भारत की यात्रा की, भारत के प्राचीन नाम 'यिन-तु' का उल्लेख किया।
  - **ह्वेनसांग** ने 'सेई-यू-केई' में अपनी यात्रा और अनुभवों का विस्तार से वर्णन किया है।
- **बौद्ध धर्म का पतन:**
  - सन् **1193 ईस्वी में बख्तियार खिलजी द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय को नष्ट** कर दिया गया, जिससे भारत में बौद्ध धर्म का पतन हुआ।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 12: प्राचीन भारत में वास्तुकला

- **खजुराहो मंदिर**
  - **स्थान:** छतरपुर जिला, मध्य प्रदेश
  - **काल:** 950 - 1050 ईस्वी
  - **उल्लेखनीय मंदिर:** कंदरिया महादेव मंदिर (11वीं शताब्दी में विद्याधर द्वारा निर्मित)
  - **मंदिरों के प्रकार:** वैष्णव, शैव, शाक्त, जैन
  - **महत्वपूर्ण मंदिर:**
    - **मातंगेश्वर मंदिर:** भगवान शिव को समर्पित, राजा धंगदेव के शासनकाल में निर्मित।

      शासन
    - **पार्श्वनाथ मंदिर:** जैन मंदिरों में प्रसिद्ध
    - **अन्य मंदिर:** चौसठ योगिनी, ब्रह्मा, लालगुआन महादेव, लक्ष्मण,

      विश्वनाथ मंदिर
  - **महत्व:** यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों में सूचीबद्ध

- **गुफा चित्रकारी और चट्टानों को काटकर बनाई गई वास्तुकला**
  - **अजंता गुफाएं**
    - **स्थान:** औरंगाबाद जिला, महाराष्ट्र
    - **अवधि:** सातवाहन और वाकाटक काल के दौरान निर्मित
    - **उल्लेखनीय गुफाएँ:**
      - **गुफा 16:** महत्वपूर्ण चित्रित विषय
      - **गुफा 17:** वाकाटक युग का अच्छी तरह से संरक्षित चित्र
    - प्रसिद्ध कलाकृति: बोधिसत्व पद्मपाणि, जो नीले कमल के फूल के लिए जाने जाते हैं।
  - **बाघ गुफाएं:** गुप्त काल की गुफा चित्रकारी के उदाहरण

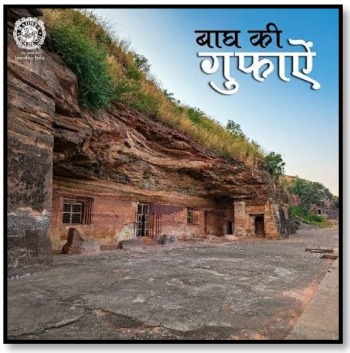

- **दिलवारा जैन मंदिर**
  - **स्थान:** माउंट आबू, राजस्थान
  - **निर्माता:** विमल शाह (चालुक्य शासक भीमदेव-प्रथम के अधीन)
  - **प्रमुख विशेषता:** असाधारण संगमरमर की नक्काशी

- **पालीताना मंदिर**
  - स्थान: शत्रुंजय हिल, भावनगर जिला, गुजरात
  - महत्व: जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल

- **एलिफेंटा गुफाएँ**

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUC

- **स्थान:** एलीफेंटा द्वीप, मुंबई
- **काल:** 5वीं से 6वीं शताब्दी ईस्वी
- **विशेषताएं:** हिंदू गुफाओं का बड़ा समूह, बौद्ध गुफाओं का छोटा समूह
- **प्रमुख प्रतिमा:** त्रिमूर्ति शिव

- **एलोरा गुफाएँ**
  - **स्थान:** औरंगाबाद जिला, महाराष्ट्र
  - **काल:** निर्माण के विभिन्न काल
  - **गुफाओं का वर्गीकरण:**
    - 1 से 12: बौद्ध
    - 13 से 29: हिंदू
    - 30 से 34: जैन
  - **प्रमुख मंदिर:** कैलाश मंदिर (राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम द्वारा द्रविड़ शैली में निर्मित)

- **नासिक गुफाएँ**
  - **स्थान:** नासिक, महाराष्ट्र
  - **वैकल्पिक नाम:** पांडवलेनी

- **कोणार्क सूर्य मंदिर**
  - **स्थान:** ओडिशा
  - **निर्माता:** राजा नरसिंहदेव-प्रथम
  - **काल:** 13वीं शताब्दी
  - **डिजाइन:** बारह जोड़ी सजावटी पहियों वाला सौर रथ, सात घोड़े
  - **वैकल्पिक नाम:** ब्लैक पैगोडा

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- **लिंगराज मंदिर**
  - **स्थान:** ओडिशा
  - **समर्पित:** भगवान शिव (लिंगराज)
  - **ऊंचाई:** लगभग 180 फीट।
  - **वास्तुकला:** नागर शैली

- **जगन्नाथ मंदिर**
  - **स्थान:** पुरी जिला, ओडिशा
  - **वास्तुकला:** नागर शैली

- **मोढेरा का सूर्य मंदिर**
  - **स्थान:** गुजरात
  - **निर्माता:** राजा भीमदेव-प्रथम (सोलंकी वंश)

- **अंगकोरवाट**
  - **स्थान:** कंबोडिया (कम्पुचिया)
  - **निर्माता:** खमेर राजा सूर्यवर्मन-द्वितीय
  - **काल:** 12वीं शताब्दी का आरंभ
  - **डिजाइन:** द्रविड़ शैली की वास्तुकला में निर्मित हिंदू मंदिरों का सबसे बड़ा समूह
  - **वैकल्पिक नाम:** यशोधरा पुरा

- **बोरोबुदुर स्तूप**
  - **स्थान:** जावा द्वीप, इंडोनेशिया
  - **महत्व:** यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

- **द्रविड़ मंदिर वास्तुकला**
  - **काल:** पांड्यों का शासनकाल
  - **विशेषताएं:** प्राचीरों और भव्य द्वारों (जिन्हें गोपुरम कहा जाता है) वाले छोटे मंदिर।

- **पल्लव वास्तुकला**
  - **राजा:** नरसिंहवर्मन प्रथम (महामल्ल) (640-674 ई.)
  - **शैली:** ममल्लन शैली
  - **शहर:** मामल्लापुरम (महाबलीपुरम)
  - **प्रमुख संरचनाएं:** शोर मंदिर, रथ, अर्जुन की तपस्या
  - **द्रौपदी रथ:** अखंड मंदिरों में सबसे छोटा रथ, बिना किसी अलंकरण के।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- **चोल वास्तुकला**
  - **कोरंगानाथ मंदिर:** चोल शासक परांतक-प्रथम के दौरान निर्मित
  - **राजराजेश्वर मंदिर:** राजराज प्रथम के शासनकाल में निर्मित, तंजौर में ग्रेनाइट पत्थरों का उपयोग किया गया।
  - **गंगईकोंडा चोलपुरम मंदिर:** राजेंद्र चोल के शासनकाल में निर्मित ।

- **सोनागिरी**
  - **स्थान:** दतिया, मध्य प्रदेश से 15 किमी दूर
  - **महत्व:** दिगंबर जैन भक्तों के लिए एक पवित्र स्थल, जिसमें 77 जैन मंदिर हैं।
  - **प्रमुख मंदिर:** मंदिर संख्या 57, भगवान चंद्रप्रभु को समर्पित।

- **विरुपाक्षा मंदिर**
  - **स्थान:** हम्पी, कर्नाटक
  - **समर्पित:** भगवान शिव (विरुपाक्ष)

- **मंदिर वास्तुकला शैलियाँ**
  - **नागर शैली:** उत्तर भारत में प्रचलित, ओडिशा में शुद्ध रूप में पाई जाती है।

- **द्रविड़ शैली**: दक्षिण भारत में, विशेषकर तमिलनाडु में प्रचलित
- **वेसारा शैली:** नागर और द्रविड़ शैलियों का संयोजन, जिसे चालुक्य शैली के नाम से भी जाना जाता है।

- **नैमिषारण्य**
  - **स्थान:**सीतापुर जिला, उत्तर प्रदेश
  - **महत्व:** ऋषि दधीचि और भगवान इंद्र द्वारा प्रयुक्त वज्र हथियार से संबंधित।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 13: दक्षिण भारत (चोल, चालुक्य, पल्लव और संगम काल)

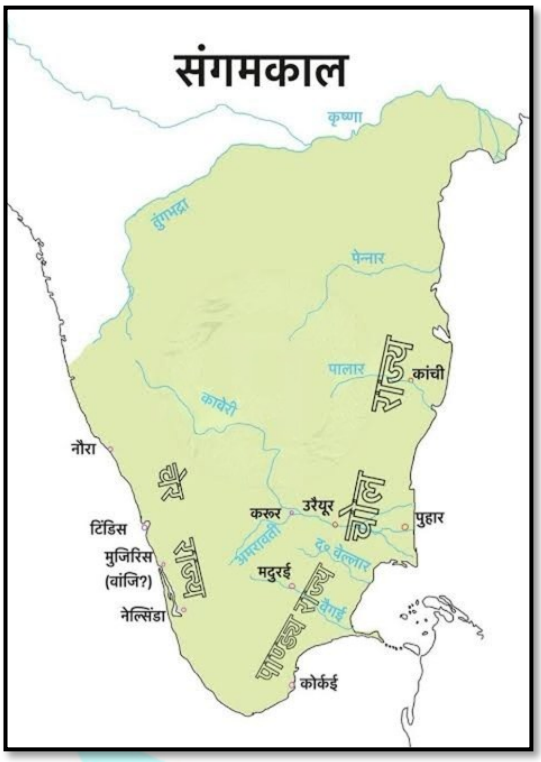

संगम काल

- **संगम साहित्य:**
  - **परिभाषा** कवियों का सम्मेलन या विद्वानों का मंच; इन सम्मेलनों के दौरान निर्मित साहित्य।
  - **तीन संगम:**
    - **पहला संगम:** मदुरै में आयोजित; **अध्यक्ष: संत अगस्त्य और तोलकाप्पियार।**
    - **दूसरा संगम**: कपडापुरम में आयोजित; **अध्यक्ष: संत अगस्त्य**.
    - **तीसरा संगम:** मदुरै में आयोजित; **अध्यक्ष: नक्कीरारा**.
  - **अगस्त्य:**
    - महत्वआर्य संस्कृति से प्रभावित दक्षिण भारत; **"तमिल साहित्य के जनक"** के रूप में जाने जाते हैं।
  - **तोलकाप्पियम:**
    - **लेखक तोलकाप्पियार**; प्राचीन तमिल व्याकरण और काव्यशास्त्र ग्रंथ।
  - **सिलप्पदिकारम:**
    - लेखक: **इलांगो आदिगल**; कन्नगी और कोवलन की कथा.
  - **कुरल:**
    - लेखक **तिरुवल्लुवर**; जिन्हें तमिल साहित्य की बाइबिल माना जाता है।
  - **रामावतारम/तमिल रामायणम:**
    - लेखक: **कंबन**; रामायण का तमिल संस्करण.

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

चोल राजवंश

- **स्थापना एवं विस्तार**:
  - स्थापनाविजयलय चोल द्वारा स्थापित (9वीं शताब्दी)।
  - **राजराज प्रथम:**
    - सैन्य उपलब्धियाँचेरास पर विजय प्राप्त की और नौसैनिक अभियान चलाए।
  - **राजेंद्र चोल प्रथम:**
    - **विजय**: **श्रीलंका पर कब्जा किया, गंगईकोंडा चोलपुरम की स्थापना की।**
    - चोला गंगमविजयों की स्मृति में निर्मित कृत्रिम झील।
  - **प्रशासन:**
    - ग्राम **प्रशासनउत्तरमेरूर** शिलालेख में इसका विस्तृत वर्णन है; इसमें वरियम (पर्यवेक्षित गतिविधियाँ) और विभिन्न परिषदें (जैसे जल आपूर्ति के लिए एरी वरियम) जैसी समितियाँ शामिल थीं।
    - **प्रांतीय संरचना:** मंडलम, कोट्टम, नाडु और कुर्रम में विभाजित।

- **वास्तुकला:**
    - **बृहदेश्वर मंदिर**:
        - विशेषताएँद्रविड़ शैली में निर्मित; भारत का सबसे बड़ा और सबसे ऊंचा मंदिर; इसमें नंदी की विशाल प्रतिमा शामिल है।
    - **चोला कला:**
        - **मूर्तियों:** नटराज (शिव) और दक्षिणामूर्ति की मूर्तियों सहित कांस्य मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध।
- **सैन्य और नौसैनिक शक्ति:**
    - नौसेना की ताकतचोल साम्राज्य के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई; बंगाल की खाड़ी को चोल झील में परिवर्तित किया।
    - **टक्कोलम का युद्ध**: राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीय द्वारा चोलों की पराजय।
- **कूटनीति और व्यापार:**
    - बौद्ध प्रतिनिधिमंडलकुलुत्तुंगा प्रथम के शासनकाल (1077 ईस्वी) के दौरान चीन भेजा गया।

अन्य दक्षिण भारतीय राजवंश

- **पल्लव राजवंश:**
    - **सिंहविष्णु:**
        - शीर्षकअवनीसिंह ने चोल, पांड्य और सिंहल राजाओं को परास्त किया था।
    - **नरसिम्हावर्मन प्रथम:**
        - शीर्षकमहामल्ल; सैन्य विजयों के लिए प्रसिद्ध।
    - **महेंद्रवर्मन प्रथम:**
        - साहित्यिक योगदान: लेखक "मत्ताविलासप्रहसन।"
- **चालुक्य वंश:**
    - **पुलाकेसिन I:**
        - संस्थापक: **वतापी (बादामी)** को राजधानी के रूप में स्थापित किया।
    - **पुलाकेसिन द्वितीय:**
        - उपलब्धियोंऐहोल शिलालेख में प्रलेखित; माटवालिन द्वारा चीन के साथ संबंधों का उल्लेख किया गया।
    - **कदंबा राजवंश:**
        - पूंजी:वनवासी; मयूरशर्मन द्वारा स्थापित; पुलकेशिन द्वितीय द्वारा संलग्न।
- **अन्य महत्वपूर्ण स्थल:**
    - **अरिकमेडु**:
        - निष्कर्षरोमन कलाकृतियाँ जिनमें मनके और उत्कीर्णन शामिल हैं; एक रोमन शहर के रूप में पहचाना गया।
    - **उरैयूर**:
        - महत्व: "**पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी**" में उल्लिखित प्रमुख कपास केंद्र।
    - **मीनाक्षी मंदिर**:
        - जगहमदुरै; मूल रूप से कुलसेकरा पांड्या द्वारा निर्मित; कमल के आकार का शहर इसे घेरे हुए है।

व्यापार और आर्थिक संबंध

- **बंदरगाह और ट्रेड यूनियनें**:

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

- ट्रेड यूनियन: **मणिग्रामम, नंदेसी, वलंजियार**; व्यापार एवं व्यवसाय को प्रोत्साहित किया।
- एम्फ़ोरा जारप्राचीन रोम में इसका प्रयोग शराब या तेल के लिए किया जाता था।

- **रोमन व्यापार:**
  - **काली मिर्च**: अत्यधिक मूल्यवान; संस्कृत में **'यवनप्रिया'** के नाम से जाना जाता है।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCCESS

अध्याय 14: प्राचीन साहित्य और साहित्यकार

महत्वपूर्ण लेखक और उनकी रचनाएँ

1. **कालिदास:**
   - **अभिज्ञान शाकुंतलम**: शकुंतला और दुष्यन्त की प्रेम कहानी को दर्शाने वाला एक प्रसिद्ध नाटक।
   - **कुमारसंभवम:** शिव और पार्वती के पुत्र कुमार (स्कंद) के जन्म पर आधारित एक महाकाव्य।
   - **मालविकाग्निमित्रम्:** राजा अग्निमित्र और मालविका के बीच रोमांस के बारे में एक नाटक।
   - **मेघदूत:** एक गीतात्मक कविता जिसमें एक प्रेमी बादल के माध्यम से अपनी दूर स्थित प्रेमिका को संदेश भेजता है।
   - **रघुवंश:** रघुवंश की कहानी बयां करने वाला एक ऐतिहासिक महाकाव्य।
   - **ऋतुसंहार:** एक कविता जो भारत के छह मौसमों का वर्णन करती है।

2. **भास:**
   - **स्वप्नवासवदत्तम्:** एक संस्कृत नाटक जो उज्जैन के राजा और एक दरबारी महिला के बीच प्रेम की कहानी को दर्शाता है।
3. **जयदेव:**
   - **गीत गोविंद:** एक महाकाव्य कविता जो कृष्ण और राधा के बीच के दिव्य प्रेम का वर्णन करती है।
4. **सूरदास:**
   - **सूरसागर:** भगवान कृष्ण पर केंद्रित भक्ति कविताओं का संग्रह।
   - **सुर सारावली**: कृष्ण पर लिखी कविताओं का संग्रह।
   - **साहित्य-लहरी:** सूरदास की एक और महत्वपूर्ण रचना।

5. **तुलसीदास:**
   - **रामचरित मानस:** हिंदी में रामायण का एक काव्यात्मक पुनर्कथन।
   - **विनय पत्रिका:** एक भक्तिपूर्ण कार्य।
   - **कवितावली**: भक्ति कविताओं का संग्रह।
6. **दण्डी:**
   - **दशकुमारचरितम्:** दस राजकुमारों के कारनामों का वर्णन करता है।
7. **विशाखदत्त**:
   - **मुद्राराक्षस:** एक संस्कृत नाटक जो कौटिल्य की सहायता से चंद्रगुप्त द्वारा नंदों के पराजय को दर्शाता है।
   - **देवी-चंद्रगुप्तम:** एक अन्य उल्लेखनीय कृति।
8. **अश्वघोष:**
   - **बुद्धचरित**: बुद्ध के जीवन का एक काव्यात्मक वृत्तांत।
   - **सौन्दरानन्द काव्य:** एक दरबारी काव्य।
9. **हर्ष:**
   - **रत्नावली:** हर्ष द्वारा लिखित एक नाटक।
   - **प्रियदर्शिका:** हर्ष का एक नाटक।
   - **नागानंद**: हर्ष द्वारा लिखित एक नाटक।

X IAS EDUCATION | SIMPLIFYING SUCC

10. **भास्कराचार्य (भास्कर द्वितीय):**
    - **सिद्धांत सिरोमणी:** इसमें चार भाग शामिल हैं - लीलावती (अंकगणित), बीजगणित (बीजगणित), गणिताध्याय (गणित), और गोलाध्याय (गोलाकार खगोल विज्ञान)।

11. **आर्यभट**:
    - **आर्यभटीय:** इसमें खगोल विज्ञान, गोलाकार त्रिकोणमिति, अंकगणित, बीजगणित और समतल त्रिकोणमिति जैसे विषय शामिल हैं। आर्यभट्ट पृथ्वी की गोलाकारता और घूर्णन को समझने में अग्रणी थे।
12. **वराहमिहिर:**
    - **पंचसिद्धांतिका:** यूनानी खगोल विज्ञान पर आधारित।
    - **बृहत् संहिता:** ज्योतिष और अन्य विज्ञानों पर एक विश्वकोशीय ग्रंथ।
13. **संस्कृत साहित्य:**
    - **मनुस्मृति:** इसे मानव धर्म शास्त्र के नाम से भी जाना जाता है, यह हिंदू धर्म में ब्राह्मणवादी धर्म पर सबसे प्राचीन छंदबद्ध रचना है।
    - **पंचतंत्र:** पंडित विष्णु शर्मा द्वारा संकलित पशु कथाओं का एक संग्रह, जिसका अबुल फजल द्वारा अरबी में अयार-ए-दानिश के रूप में अनुवाद सहित कई भाषाओं में किया गया है।
    - **मत्तविलास प्रहसन:** पल्लव शासक महेंद्र वर्मन द्वारा लिखित।

अन्य उल्लेखनीय ग्रंथ

- **राजतरंगिणी:** कल्हण द्वारा लिखित, यह कश्मीर के राजाओं का एक छंदबद्ध ऐतिहासिक वृत्तांत है।
- **कामसूत्र:** वात्स्यायन द्वारा लिखित, यह प्रेम और यौन व्यवहार पर एक शास्त्रीय ग्रंथ है।
- **अर्थशास्त्र:** चाणक्य द्वारा लिखित, यह राज्य-प्रशासन और सैन्य रणनीति पर एक ग्रंथ है।
- **अष्टाध्यायी:** पाणिनि द्वारा लिखित, यह संस्कृत व्याकरण पर एक मूलभूत पाठ है।
- **मृच्छकटिकाम्:** शूद्रक द्वारा लिखित एक संस्कृत नाटक, जिसे "छोटी मिट्टी की गाड़ी" के नाम से भी जाना जाता है।
- **विक्रमांकदेव चरिता**: बिल्हना द्वारा लिखित, इसमें विक्रमादित्य VI के कारनामों का वर्णन है।
- **कातंत्र:** सर्ववर्मा द्वारा लिखित, यह वक्रपटुता पर एक ग्रंथ है।
- **मिताक्षरा:** विज्ञानेश्वर द्वारा लिखित, यह याज्ञवल्क्य स्मृति पर एक टिप्पणी है।

महत्वपूर्ण बिंदु

- **हेरोडोटस:** 'इतिहास के जनक' के रूप में जाने जाने वाले, उनकी कृति "**हिस्टोरिका**" में **भारत-फारस** संबंधों का विस्तृत वर्णन है।
- **शून्य की खोज:** भारतीय गणितज्ञों ने शून्य की अवधारणा को प्रस्तुत किया, जो बाद में अरबों और फिर यूरोप तक पहुंची।

XIAS

DOWNLOAD X IAS APP NOW FOR FREE RESOURCES FOR UPSC/PCS

DOWNLOAD THE APP NOW ! CLICK HERE

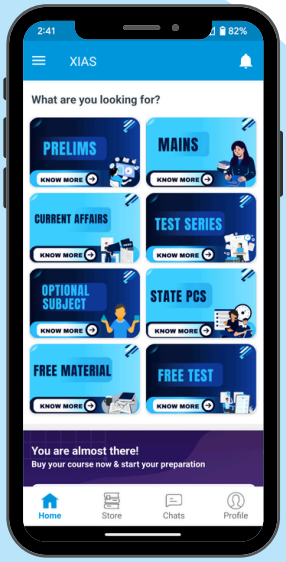

Visit at www.xias.in

SEND YOUR QUERY TO US CLICK BUTTON BELOW